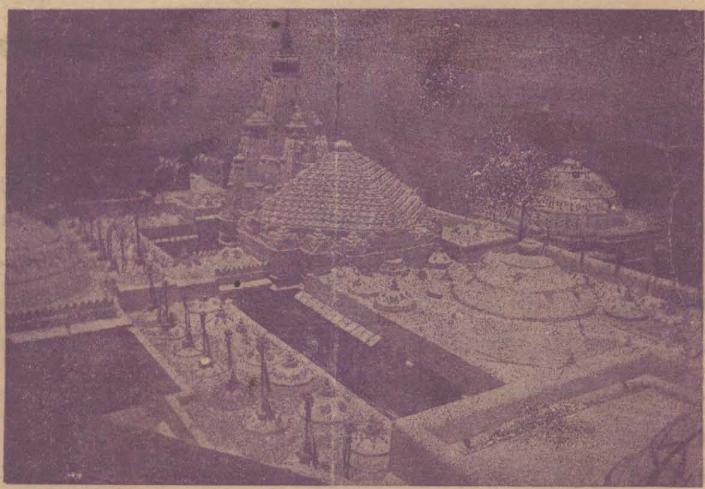


पुस्तक ३६ मु. •
अंक १२ मे।.

संवत् १९६८
अप्रैल,



श्री नैनात्मानंद निर्वाणस्थान पुनित तीर्थ श्री रैवताचाला.

प्रकाशक,

श्री नैन आत्मानंद सभा - भावनगर.

॥ विष्णु-परिचय ॥

१. पार्वीनाथ स्तवन.	(सुथश)	२६६
२. हंसान्योक्ति	(कवि रेवाशंकर वालजु अधिका)	२७०
३. आत्मभिंभ	(अमरयंद मावल शाह)	२७१
४. अर्थूहगिरि	(आखुभाई भ. शाह)	२७२
५. प्रश्नमनी भूर्जि समा अनाथ मुनि	(मुनिश्री हेमेन्द्रसागरज्ञ महाराज)	२७३
६. सत्यपुरुष	(अमरयंद मावल शाह)	२७४
७. भावनाभण शुं न करी शके ?	(आ. श्री विजयकरतूरसूरिज्ञ महाराज)	२७५
८. तात्त्विक उपदेश वचनो (आ. श्री विजयरामयंदसूरिज्ञ ग्रशिष्य मुनि पुष्टविजयः	संविज्ञपात्रक)	२७६
९. वीर प्रखुनी स्तुति	(मुनिश्री लक्ष्मीसागरज्ञ महाराज)	२८२
१०. ऐदो हिंगंभर साधु !	(मोहनलाल दी. चोकसी)	२८३
११. श्री मुनिसुंदरसूरि	(मोहनलाल द. देशाई भी. ए. एलएल. भी. एडवेक्ट)	२८७
१२. वर्तमान समाचार (पंजाम समाचार वि.)	२८८
१३. स्वीकार समालोचना	२९०

अभारा मानवंता ग्राहकोने ३८-४० मा वर्षनुं भेट पुस्तक

“ श्री विजयानंदसूरि ”

आवता आवशु भासथी ‘ श्री आत्मानंद प्रकाश ’ भासिक ४० मा वर्षभां प्रवेश करे छे. यार वर्षथी आत्मानंद प्रकाश भासिकनुं कैद (भोटाभां भोटुं) काउन आठ घेल छे. वणी विद्वान मुनिभाराजान्नो. अने लेखक बंधुओंना विविध लेखावडे अने ६२ भासे नवीन सुंदर रंगेना तीर्थीना झेटावडे सुशोभित, सुंदर अक्षरे. अने सुंदर टाइटलवडे समृद्ध भनेल हेवाथी खर्च पछु स्वाभाविक वधेल छे, छतां ६२ भासे नियमित प्रकट थाए करे छे.

हालभां भयंकर लडाई चालती हेवानां कारणे ऐ वर्षथी कागजो, भ्वेका अने क्लरेना भाव त्रणु गण्डा वध्या छे (मान छपाववाना भाव वध्या नथी), छतां आवी भयंकर लडाई भाव पच्चीश के पचास वर्षे देशना अशुभ उद्ये ७ आवेल हेवाथी कागजो. वजेरेना भाव वध्या छतां, पछु ‘ आत्मानंद प्रकाश ’ ने भीलकुल हानि पहेंचवानो भय नथी, कारणु के आवो भोंधवारीनो. प्रसंग वारंवार आवतो नथी, तेम ऐ चाव वर्षे २५ तेथी भोटी ओट ज्वानो भय पछु भासिक भाटे नथी, कारणु के ओट ज्वानी होय तो पछु सभाभां भीज भक्तानभाङुं, पुस्तक-वेचाणु, शान अने ६२ भासे थतां नवा नवा लाईक गेम्पर अने सब्योनी आवक वजेरे आवडना आता हेवाथी सामान्य तोटो आवे तो ते आताओथी पूरी शक्तय छे तेम धारी, भासिकनुं नेम

(अनुसंधान टाइटल पृष्ठ ३ ज्ञ.)



पुस्तक : ३६ सुं : आत्म-
अंक : १२ मे : सं. ४७ :

वीर सं. २४६८ : अशाढ़ :
विक्रम सं. १५८८ : जुलाई :

पार्वनाथ स्तवन.

(तज्जुनिया रंगरंगीली-हितमः धरतीमाता)

भलिया पार्व प्रलुब्ध खारा, भलिया पार्व प्रलुब्ध ... ३०

थे रसिया सुज अंतर वसीया, शिवामृत के क्यारे हैं;
जग न्यारी हृषि तेरी भाया [२] सुखकारी हितकारी हैं;
भंजुल ज्योति द्विल सरौवर, झीली झीली अलंधेली... खारा-१

जनम जनम भर पापे अपना, ध्यानगंगा में डूधाते हृषि;
ग्रेम की नाव चलाते हैं, सुगति के घाट हीभाते हृषि;
जिसका नूर सूरज से न्यासा, सुरति छलछझीली... खारा-२

लुवन वणीया गुनल कूलडां, झीलते सुख हीप ज्योते;
वो सैयाँको भजनेवाले, हुनिया छाड़ी पार चले;
आज उठत हूँ यश सुवेरा, जिनवर तान रसीली... खारा-३

—सुर्यश

[२७०]

श्री अत्मानंद प्रकाश.

हंसान्योक्ति.

वसंततिलका वृत.

रे राजहंस ! किमिति त्वमिहा गतोऽसि ?
 योऽसौ बकः स इह हंस इति प्रतीतः ।
 तद्गम्यतामनुपदेन पुनः स्वसूमौ,
 यावत् वदन्ति न बकः खलु मृदलोकाः ॥ १ ॥

आ पत्रना साहित्यप्रेमी सारथाहुक वाचकवृद्धं !

आ अन्योऽक्षितना गर्भमां स्थान अने माननी भग्नतादर्थक डेवुं सुंदर रहस्य
 समाधेलुं छे ? ते वाचो अने विचारो !!

कैष एक राजहंस के जेनुं निवासस्थान मानसरोवर छे. मानससरने वैष्णव
 अने निवास ते। क्षविक्षलभनो। सुप्रसिद्ध विषय ज छे. ए रम्य स्थानमां विहार
 करनारो। ए पक्षीभूषणु हंस रमणु करतां एक शुष्क भूमिमां आवी चढ्यो. तेनुं
 भनोहर श्वेतांग अने गंभीर गति जेई आभवार्तीयो। आश्चर्यचाक्ति थह गया।
 परस्पर घोलवा लागता। पहेलां ज त्यां कैष संस्कारी-सुघड मुसाहर ते मार्गे
 निकल्यो। तेणु हंसने जेयो अने भनमां विचार्युं डे-“ अहो ! आ शुं ? क्यां आ
 रसविहाणी आभ्यभूमि अने क्यां आ स्वच्छताना॒ परस्सीमा दृश्यवनारो हंसराज ! !
 जङ्कर आ पक्षीराज मार्ग भूख्यो। छे, माटे तेनुं मानवांग आ गामीआयो न करे
 माटे तेने चेतावुं। एम विचारी ते परिष्क भोव्यो। डे:-

“ हे राजहंस ! इडा-इपाणा पक्षीराज ! तुं आ भूमिमां क्यांथी आवी चढ्यो ?
 अहुंना लोडो। तो अगलाने तथा हंसने सरभां ज गणु छे, ए तो। “ उज्जुं
 एटलुं फूध ” ज जाणुनारा छे, ए सौ गुण्यपरीक्षक डे गुण्यथाहुक नथी, तारुं सोभ्य
 स्वरूप तेच्यो। जाणुता नथी, तारी दुग्धजलमेदविधि प्रासद्धाम् नामनी दुर्दरत-
 प्रसादित चातुर्यताथी ए सौ अजाणु छे, तेथी एडाटसे तने निहाणी रह्या छे;
 माटे तने संशाथी चेतावुं छे के हे लाई ! हवे तुं एक पगलुं पछु आगण लर्या
 विना। हुरत ज तारी स्वभूमि तरेक चाल्यो। ज ! ! ! तारुं माहात्म्य, ज्यां सुधी आ
 भूर्भ लोडो आ अूगलो। छे एम नथी क्युं त्यां सुधी ज सचवायुं छे, माटे
 ए। चातुर्यक्षिरौभिषु हंसराज तुं ए कठोर-हृदयहाहुक शण्ठ न सुष्णे त्यां सुधीमां
 चाल्यो। ज ! लाई चाल्यो। ज ! ! !

આત્મબિંદિ.

[૨૭૧]

પ્રકારાન્તરે ખોધ દર્શાવનારી આ અન્યેડિતા સ્પષ્ટ સુચન કરે છે કે સ્થાનખાલ થિયું એ જ માનખાલ થવાની નિશાની છે. દેશી પ્રસિદ્ધ વ્યવહારી કહેવત ખણું છે કે- દંતા, નરા, નખા, કેશા એ ચારે સ્થાનબ્રષ્ટા ન શોરને અર્થાતું સ્થાનમાં જ માન છે.

વસંતતિલકા.

હે રાજહુંસ સર માનસના નિવાસી, સ્વસ્થાન હોડી અહીં આજ ખર્યો ઉદ્ઘાસી; તારું ન ગૌરવ અહીં સચ્ચવાય લાઈ, આ લોક હંસ-બક એક ગણે સહાઈ. ૧
કે લાઈ! તું એ હવે અહીંથી સીધાવે, જ્યાં સુધી લોક બક શખ તને ન ગાવે;
ત્યાં સુધીમાં નિજ સ્થળે જઈને વિરામે, રે સ્થાનખાલ જન સૌ અપમાન થામે. ૨

દ્વારા.

માનવળુંબનું ખરું, માન એ જ મહુતત્વ;
આ અન્યેડિતમાં રહું, સાચું એક જ સત્ત્વ. ૧
છેવટ શાસ્ત્રોડિત એક સૂત્રવાક્ય લખી આ વિવેચન સમાપ્ત કરીશ. “પરસદન
નિશાસી કો લઘુત્તા ન યાતિ।”
વહુલાલ વાચક અનુષ્ઠાનો! આ સત્ત્વને આપ ખણું સ્વીકારશો કે?

વડવા તા. ૨૮ : ૬ : '૪૨ } દૈવાશાંકર વાલલુ અધ્યેકા

સૂર્યવાસર } નીતિધર્મેપહેશક-૭. જૈન કન્યાશાળા-ભાવનગર.

આ ત્મ બિં ખ.

(ચોપાઈ)

- | | |
|--|--|
| દર્પણથી હેખાયે મૂખ, કેવળજાની હેખે સુખ; | |
| દીપકથી થાયે ઉલસ, કેવળજાને આત્મપ્રકાશ. ૧ | |
| સૂર્યથી સધળે સ્થળ પ્રકાશ, કેવળજાને અંતર ઉલસ; | |
| જળમાં હૃદ્યે પ્રતિબિંદિ, કેવળજાને આત્મબિંદિ. ૨ | |
| કર્મ સકલનો થાયે ક્ષય, કેવળજાનો થાય ઉદ્ય; | |
| ભૂત, અવિષ્ય ને વર્તમાન, કેવળી હેખે તે તત્કાળ. ૩ | |
| અનંતજ્ઞાન એ વિષુ અભ્યાસ, ધ્યાનથી થતાં કર્મો નાશ; | |
| તત્કાળ થાયે કેવળજાન, નાશ થતાં ‘અમર’ અજ્ઞાન. ૪ | |

—અમરચંહ માયલ શાહ

[२७२]

श्री व्यारमानंड प्रकाश.

अर्थूदगिरि.

(शिखरिषी)

पुराणा तुं शास्त्रे,
हिंनो व्याप्ते छे,
वणी कं कै शास्त्रे,
अने तारे काजे,

लधु हिमगिरे ! गूर्जरताणा,
तुज सुयश वेगे अति धृष्टा;
तुज गुणताणा पाठ वहता,
कविजन अरे ! वाह चढता। १

अरे तुं शोभा छे,
विलोक्ते आये,
वणी लीलां आडे,
नही ने नाणातुं,

रससदन छे रम्य पछु छे,
रसिकजनने तुं रम्यु छे;
कुसुमलतिकातुं जतन छे,
युग्म युग्मयकी तुं वतन छे। २

विहृगीने प्राणी,
अमो पाम्या आतुं,
वणी रम्योत्संगे,
अने शान्ति काजे,

अहुविधताणा आंगणु वसे,
सुखधर ग्रसो ! अंतर हुसे;
ऋषिजन रम्या कैर्ड रमतां,
विविधजन कं आवी वसतां। ३

वणी वस्तुपाले,
वधारी शोभा छे,
अने चैत्ये जैनी,
प्रसारे छे हीसि,

सचिव विमले गूर्जरताणां,
अनुपम कृताथी जगतमां;
अथणगठमां हाटकताणां,
अतिशय अने हिंय जगमां। ४

अन्या छे केम्योमां,
अन्नरो अंधाई,
अन्या छे मेमानों,
रमे छे तारे त्यां,

विधविध यरे केतन हुवे,
नगर सरों लागत हुवे;
हूर मुदकना मानव अने,
सुश सुश थह छृष्ट वहने। ५

-आमुलाई अ. शाह.

દે. મુનિરાજશ્રી હેમન્ડસાગરજી મહારાજ.

પ્રશાભની મૂર્તિસમા અનાથ મુનિ

હેહ-વેહના ટાળવા ઓષધ પથ્ય બને,
કહાચ હેહ-વેહના ટાળવા ઉપચાર મળે;
પણ ઓષધ શું અનાથપણું ટાળવાતું ?
ઓષધો સર્વ નિર્માલ્ય છે ત્યાં;
અન્યની સહાય છે વૃથા,
પથ્ય નીવડે ત્યાં તો સ્વાવલંઘિયણું.
આત્મા નિજ સ્વરૂપ નિહાળી,
સ્વરૂપમાં સહા તન્મય રહે,
તે જ સ્વાવલંઘન,
ધન, વૈલબ, ઝી, સંખધીએ,
સંખધ ધારે સ્વાર્થ અર્થે જ;
આદ્ય પ્રલોભનોથી વિરક્ત આત્મા જ
ફર કરે અનાથપણું, ને
તરીને પાર થાય હુસ્તર ભવસાગર,
થથા પાર કર્યો અનાથ મુનિવરે.

* * * *

ધર્મપ્રેર્ભી હતો, પ્રજપ્રિય—
મંગધેશ્વર શ્રેણીક.
ગજરાજ, રથ, વાળ અનુચ્ચરણણ પરિવારિત
અશ્કીડા કરતો વિચ્ચો એકદા
સમુદ્ધ ને સુશોભિત રાજથી નગરના
સુદર્તાના પ્રતિકૃપ
માડિત કુક્ષિનામક ચૈત્ય-ઉદ્ઘાને.
કુસુમોથી લચતી લતિકાએ,
વિવિધરંગી વિહુગો,
ભરમોના શુંભરવથી,
અલંકૃત હતો આ ઉદ્ઘાન,
દેવ-ગણુના નંદનવન સમો,

ઉદ્ઘાનના મધ્યમાં
સ્ફુરિકની શિલા પર
વિરાઙ્તિત હતા સુશાનત
એક મુનિવર.
સુકુમાર, સુસમાહિત, સંયત
એ સાધુવર પર દાખિ ઠરી—
એ નૃપાલ શ્રેણીકની.
અચાનક જ વચ્ચેનો સચ્ચાં
નૃપાલના સુખ-કમલથી
અહો બંણઃ અહો રૂપમ
અહો આર્યસ્વ સૌમ્યતા !
અહો ક્ષાન્તિઃ અહો મુક્તિ (નિર્લોભતા)
અહો ભોગેડસંગતા ||
અહો વણ્ણ અહો રૂપ, કેવી આર્યની સૌમ્યતા !
ક્ષાન્તિ કેવી ! અહો ! મુક્તિ, કેવી લોગે અસંગતા !
અને અનિકના બધે ઝૂકે વૃક્ષ
તેમ ઝૂક્યો નૃપ,
મુનિવરના ચરણારવિનંદમાં;
તપરૂપી પ્રભલ વાયુના ભળથી,
ને પ્રક્ષ કર્યો
“ આર્ય કેમ થહી સાધુતા
આવી સુવાવસ્થામાં ? ”
સૌમ્ય વદને ઉચ્ચારે છે સાધુવર,
“ રાજન ! હું અનાથ છું,
નથી કોઈ નાથ મારો;
ન મિત્ર કોઈ, ન સંખધી,
દીક્ષા થહી એ જ ડારણુ
સુવાવસ્થામાં.”
નમલાવે વહે છે નૃપતિ

[२७४]

श्री अमात्मानंड ग्रन्थारा.

“ मुखाकृति ने स्वरूप संपत्ति
स्पष्ट व्यक्त करे छे महाराज !
के नथी आप अनाथ,
‘ यथाकृतिस्तत्र गुण वसन्ति ’
छतां आशा होय तो
थाउं हुं नाथ आपने।
सर्वं दीते थशो सुदाल आपने.”

मंड सिमत करे छे मुनिवर
भगधराजना प्रत्युतरमां।

“ अनाथ छे तुंचे राजन् !
तो क्यांथी धने तुं नाथ अन्धनो ? ”
आत्मनापि अनाथोऽसि, श्रेणिक ! मगधाधिप ।
आत्मनाऽनाथः सन्, कथम् नाथो भविष्यसि ॥

(उ. अ. २०)

संभान्त थतो यमझीने
राजा वहे हाथ लेडी
“ मुनिवर छो आप, मा वहो असत्य,
हाथी, घोडा, अठणक होलत,
अनेक वैष्णवथी वैष्णवशाणी हुं
डेवी दीते अनाथ हुं महाराज ? ”
प्रत्युतरे पद्मा साकुवर,
“ न समज्यो मर्म मारा वयनो।
भगधापति श्रेष्ठिक !
प्राचीन समयथी सर्वं नगरोमां-
उत्तम हती
कौसांघी नामे नगरी.
त्यां हता नामांकित
धनसंयथ नामे मारा पिता,
तेमना नयननी कीकी समान
हुं हतो लाडकवाहो;
तरुणावस्थामां एकदा

अत्यंत पीडाकारी उपलु
अम्बानंड ज नेत्रपीडा;
निषुषु प्राण्याचारोन्मे
इशणताथी योज्या उपचारो,
अंजन, अंधन, लेपन ने महेन
चतुर्विंध करी चिकित्सा,
छतां सर्वं निषुषां निष्टण.
ओ ज भारु अनाथपुण्,
पिता हता सर्वं संपत्ति भवेवा
मारा आदेश आतर,
छतां थया असमर्थ,
ओ ज भारी अनाथता.
वात्सल्यना उद्धिसमी
भारी जन्महात्री,
आ समये थह निरुपाय,
ओ ज भारी अनाथता
सहेदरनो दावो करनार
पंधुओ थया लाचार
ओ ज भारी अनाथता.
प्रेमभावनी सरिताओ समी
लगिनीन्मा रडती ज रही.
पणु न अचावी शकी,
ओ ज भारी अनाथता.
पतिवता होवा छतां
अशक्त वृत्ति हाखवती,
आंसु सारती ज रही
भारी प्रियतम घटनी,
ओ ज भारी अनाथता.
डेषु सहाय करे ?
सर्वं हतां लाचार, अशक्ता.
धनघोर वादगेमां जेम

सत्पुरुष.

[२७५]

यमकी जय विद्युत्—
 तेम अपार विपत्तिओमां
 आवये। विद्युत् समो विचार—
 के ‘येहनामुक्ता थाउं तो
 ग्रहणु करुं पवित्र संयम.’
 अने लवमुक्ता थवा संयमथी
 करुं आत्म कल्याणु,
 निद्राधीन थये। एम विचारी;
 रात्रिना वहन साथे क्षीणु थध
 मारी लयंकर नेत्र—येहना,
 अने प्रभाते तो तहन सभी गह।
 संयमी थये। संबंधीओनी अनुशासी,
 आत्मिक स्वावलंभन ए ज
 साथी सनाथता.
 राजन ! ‘आत्मा छे जतो ज
 कामदुधा ने नंहनवन समेत;
 पोतानो ज पोते भित्र ने शतु’
 ‘उत्पथ प्रस्थित शत्रु-मित्रं सत्पदमाश्रितः ।
 अयमात्मैव बाह्येषु, भ्रान्ते शत्रुत्व-मित्र ते ॥१॥’
 चारित्रधारी श्रमणो,
 चारित्र अहो जेडे विषये वृत्ति,
 ए ज महान अनाथता.

त टणे चो अनाथता जन्मान्तरे पण;
 सनाथतानो साचो आदर्श तो
 वसेदो। छे तेजस्वी निर्भा संयममां ज.”
 विनाय थया भगधपति
 सुखीने साधुना वचनामृतो;
 क्षमा याची अविनय माटे,
 प्रत्यागमन क्युं नगरे,
 सम्यक्त्व प्राप्त करीने;
 डिंसक प्राणीओमां पण
 अहिंसा प्रवतीची,
 शांतिनो महामंत्र पठावता
 निर्वाणु सिधाव्या
 ए भाषान अनाथ मुनि.

(वसंततिवक्ता)

सन्मार्गमां पग धयो नृप श्रेष्ठिके जया,
 शान्ति प्रलाव प्रसर्यो हुर प्राणीओमां,
 चारित्रनी भधुर सौरभने प्रसारी,
 सेवा अनाथ मुनिना अरण्ये अभारी.
 अनुषुप—

धन्य ! एवा मुनि जेना धार्ये लाग्ये। उद्धयी,
 मुनि डेमेन्द्रना लाव एवा सहा लयी.

* * * *

सत्पुरुष.

तवंगरने रेज दिवाणी,
 संतपुरुषने सैंदीन सरभां,
 संतपुरुष छे सौथी भेटां,
 भले होय नहिं हमडी पासे,

गरीण जाणे होणी,
 लरे जाननी ओणी;
 राज पण छे नीचा,
 जानभजने ऊचा.

—अमरचंद भावल शाह

દેશ અને શ્રી વિજયકસ્તૂરસ્વરિણ મહારાજ.

માલવનાભળ શું ન કરી શકું ?

કુર્મવાદને પ્રધાન માનનાર માનવજીતિ અને દુષ્ટસ્વાદને પ્રધાન માનનાર માનવજીતિ અને ય લાવનાભળને ઘણી જ મહત્વતા આપે છે. માનવજીતિમાં આપત્તિ-વિપત્તિ તથા સંપત્તિના ને પ્રસંગો ઉપસ્થિત થાય છે તેનું સુખ્ય કારણું સામુહાચિક લાવનાભળ છે. પુરુષગલાનાંદી જડાસક્ત જીવોનું સંખ્યાભળ વધે છે ત્યારે વૈષયિક વાસના પોષણને માટે અધ્યર્મ તથા અનીતિના આશ્રય તળે મલિન લાવનાઓનું એળ પણ વધે છે અને અનિશ્ચાયે પણ માનવજીતિને આપત્તિ-વિપત્તિ લોગવાની પડે છે.

આપત્તિ-વિપત્તિ લોગવાના અનેક પ્રકાર છે; જેવા ડે-બિમારી, ભૂકાપ, ચુંદ, જળ-પ્રલય, અભિનપ્રકોપ વિગેરે વિગેરે, આ બધા ય નિમિત્તો પ્રાણીઓના ધન તથા જીવનનો ઝ્રાસ કરનારા છે, નાશ કરનારા છે. પુરુષગલાનાંદી પ્રાણીઓ પાદુગલિક સુખના સાધનોનો ઝ્રાસ થવાથી કે નાશ થવાથી, અથવા તો ઝ્રાસ તથા નાશની આશાંકથી અત્યંત ગભરાયલા ચિંતાતુર અનીને પ્રાણોથી પણ સુકાઈ જોય છે. યદ્યપિ તત્ત્વજ્ઞાની મહાપુરુષો આપત્તિ-વિપત્તિને કર્મની નિર્જરાતું કારણ માનીને ચિંતાતુર અની આર્તોરોર ધ્યાન કરતા નથી અને સમલાચે શાંતિથી વેદી લે છે, પરંતુ પુરુષગલાનાંદી, વિષયાસકત, હેઠાધ્યાસી સંસારી જીવો તો વસ્તુતત્ત્વથી અજ્ઞાત હોવાથી નિનાશી ધન તથા જીવનનો જ સુખ શાંતિતું સાધન માને છે, અને તેના વિશેગના

નિમિત્તને આપત્તિ-વિપત્તિ માને છે. જેનાથી સુકાનાને અર્થાતું જીવનાંદી સુખના સાધનરૂપ ધન તથા જીવનને જળવી રાખવાને અનેક પ્રકારના ઉપાયો કરે છે, છતાં તેમાં સહેળતા તો થોડાક જ મેળવી શકે છે; કારણું કે પૌરુષગલિક સુખના સાધનો જડ તથા જડના વિકાર રૂપરૂપ હોય છે. તેનું અસ્તિત્વ જળવી રાખવાને પુરુષગલસ્વરૂપ પુષ્યકર્મની અત્યંત આવશ્યકતા રહે છે. પુષ્યકર્મ સિવાય ધન-સંપત્તિ જળવવાને માટે બાધાથી કરવામાં આવતા હોકે પ્રયત્નો નિર્ણય નિવડે છે, અને એટલા માટે જ સુખ્યપણે ધાર્મિક પ્રયત્ન જ કરવો ધટે છે. તે સિવાયના બધા ય પ્રયત્નો નકારા ના.

પૂર્વકાળે ધાર્મિક શ્રદ્ધાના યુગમાં જ્યારે જ્યારે આપત્તિ-વિપત્તિ આવતી ત્યારે ત્યારે માનવજીતિ પોતપોતાની માન્યતા પ્રમાણે તન, મન અને ધનથી ધાર્મિક અનુષ્ઠાનોના અત્યંત આદર કરતી. મોજયોધ તથા કોઈક લોકદશાને લઇને યત્કિચિતુ કરવામાં આવતી અનીતિ તથા અધર્મને તિલાંજલી આપીને સવાં જીવ સુખી થાંચાની લાવનાથી કોઈ શાંતિસનાત્ર, જપ-તપ આદિ ધાર્મિક પ્રવૃત્તિ કેરતું, તો કોઈ યજ્ઞયજ્ઞાદિ, કોઈ પ્રભુ માર્થના તો કોઈ દાન પુન્ય કરતું, તાત્પર્ય કે સહુ કોઈ આપત્તિ-વિપત્તિમાંથી ઉગરવાને પોતપોતાના ઈધિની સહાય માગતું, અને પુન્યખળ વધારવાને પ્રયત્ન કરતું, કે

ભાવનાખળ શું ન કરી શકે ?

[૨૭૭]

જેને લઈને આપત્તિ-વિપત્તિમાંથી બચી જઈને સુખી થતું; પરંતુ અત્યારે એનાથી વિપરીત પ્રવૃત્તિ જોવામાં આવે છે. પહેલાં શ્રદ્ધાવાહનો સમય હતો ત્યારે અત્યારે બુદ્ધિવાદનો સમય છે, અને તેના અંગે અત્યારે ધન તથા લુધનને અચ્યાવવાને ધાર્મિક પ્રવત્તિઓને છોડી દ્ધને ડેવળ બુદ્ધિનો. જ અનેક પ્રકારે ઉપયોગ થઈ રહ્યો છે. ધનને એણાંનીને કોઈ લક્ષ્ય ન કરી શકે એટલા માટે તેને સોચું, ચાંદી, નોટો, ધર, જમીન આદિ અનેક રૂપોમાં ફેરવી નાખવામાં આવે છે, લુધન અચ્યાવવાને સ્થળાંતરો કે દેખાંતરો કરવામાં આવે છે, તો પણ ધન તથા લુધનના નાશની આશાંકા રણતી નથી. આવા સમયમાં ચે મોજશોઅ જૂટા નથી, અધર્મ તથા અનીતિથી અચ્યતા નથી; વૈષયિક તૃષ્ણાઓ ઓછી થતી નથી; વૈરવિરોધ શમતા નથી, અને એક ધીજના ભલાની ભાવનાની નાગૃતિ થતી નથી. પાડોશીનું બળી જાઓ, ઠળી જાઓ કે સર્વ નાશ થઈ જાઓ; પણ મારું તો બચી જ જાઓ. આ પ્રમાણેની ભાવનાવાળાઓની સંખ્યા વૃદ્ધિગત થતી ગઈ અને એક ધીજના વિનાશની ભાવનાનું વાતાવરણ ઉચ્ચ બની ચેમેર ફેલાતું ગયું. તેમજ ધીજ સુખી થાઓ કે હુંઘી થાઓ. પણ મારે તો ભાગ, બંગદા, મોટર, નોકર, ચાકર, મિથાજ, સુંદર સુંદર ધરેણું, વસ્ત્ર અને સિનેમા, નાટક, એલ, તમાસા જોઈએ જ એવી ભાવનાથી પરની પીડા ન ગણ્યીને પરસ્પરતિને પોતાની અનાવવાના પ્રયાસમાં જ અનીતિ તથા અધર્મનો પ્રચાર વધતો ગયો. કે જેને પરિણામે અત્યારની હુંઘડ પરિસ્થિતિ બિલી થઈ છે.

જ્યારે જ્યારે એક ધીજના વિરોધની, દ્રોહની ભાવનાનું બળ વધે છે ત્યારે આવા આપત્તિ-વિપત્તિના પ્રસંગો ઉપરિથિત થાય જ છે, અને પાછું જ્યારે શુભ ભાવનાખળ વધે છે ત્યારે આપત્તિ-વિપત્તિ નાશ પામી જાય છે.

ધર્મ તથા નીતિ, મનગમતા મોજશોઅમાં તેમજ તુચ્છ વૈષયિક વાસનાઓ પોથવામાં બાધ કરતા જણાવાથી ડેટલાક પુરુગલાનંહી જીવો સુધારક તરીકે બહાર આઠ્યા અને માનવસમાજના ધાર્મિક તથા નૈતિક બળને નિર્ભાન બનાવવા એહિક પૌરુગલિક સુખને સંસુખ રાખીને તેમની ધાર્મિક તથા નૈતિક ભાવનાઓને ભૂસી નાંખી ધર્મનો આશ્રય દેનાર અને નીતિનો આદર કરનાર માનવ-સમાજ હુંઘી થઈ રહ્યો છે અને ધર્મ તથા નીતિને તિલાંખલિ આપી સ્વેચ્છાવિહારી માનવસમાજ બાધ સંપત્તિ મેળવી સુખ લોગવી રહ્યો છે, એવી શ્રદ્ધા એસાડવા, પ્રાચીન સુકૃતના બળથી સુખ લોગવતા ધર્મ-વિહીન માનવીઓને ઉદ્ઘાંરણ તરીકે આગળ મૂકીને જડાસકત-ભાષ્યહીન અનેક જીવોને અધર્મ તથા અનીતિના સંસ્કાર એસાંચા કે જેના અંગે અનાદિ કાળથી પૌરુગલિક સુખમાં ટેવાયલા જીવોની ધર્મભાવના અસતી ગઈ અને અધર્મની ભાવનાનું બળ વધી ગયું. ડેટલાક સુધારકો પણ પોતાના પ્રયત્નમાં સર્કુણતા માનવા લાગ્યા. પણ આ સુધારકો અને તેમનો સુધારો કુદરતને ગમ્યો નહીં, એટલે કુદરતે પોતે જ માનવસમાજનો સાચો સુધારો કરવા કમર કરી છે, અને અધર્મ તથા અનીતિની ભાવનાથી સુખ મળી શક્તું નથી પણ પૂર્વસંચિત પુન્યઅણથી મળેલા સુખનો નાશ થઈને પરિણામે હુંઘ જ લોગવલું પડે છે, તેનો તાદ્દશ ચિતાર અત્યારના પ્રસંગોમાં

[२७८]

श्री व्यात्मानंह प्रकाशः

मानवी मात्रने प्रत्यक्ष अतावी रही छे. सुधारकोणी सुधारणा अने धारणाने धराशायी अनाववाने अदृष्ट महाशक्ति तनतोड-असीम ग्रयतन करी रही छे. जे भूमि अने प्रदेशो स्वर्गना सैंदर्यनी रप्थी करता हुता तेने ज अत्यारे लयानक यातनाना स्थगेनुं स्मरणु करावी रही छे. जडासक्त अंत्यज्ञ ल्लोगी तुच्छ भुद्धिथी गूथेली वागूलणमां इसाईने सर्वज्ञ महापुरुषोना वयनेनो अनाहट कृनाराच्छोने सर्वज्ञोना सिद्धांतोनी सत्यता सिद्ध करी आध्या सिवाय अदृष्ट महाशक्ति संहारना कार्यमांथी विराम पामवानी नथी.

धर्मणण अने भुद्धिणण आ बोने प्रकारना अणोमांथी धर्मणण वधी जय छे. देखीती रीते तो अण करतां भुद्धिणण अहु ज सारुं कार्य करतुं जण्याय छे, परंतु परिणामे विनाशक तथा विधातक पोताना स्वलाक प्रभाणु मानव-समाजने इण आपवावाणुं थाय छे. डैधिष्ठु कार्यना परिणामे भुद्धिने पक्षपाती मानवी, जयारे सङ्गता भेणवे छे त्यारे भुद्धिमत्ताना आपेशमां आवी जहुने धर्मणणने हसी काढीने वणेऽछे, पणु धर्मणणने लहुने ज भुद्धिणण कार्यतुं साधक अनी शके छे, आ आपातथी अनलिङ्ग भित्यालिमानी मानवी ज्यारे भुद्धितुं परिणाम विनाशना इपमां अनुभवे छे त्यारे तो भुद्धिणणनी अर्किचित् करतानुं लान थवाथी सर्वं कार्यमां निराश अनीने निश्चेष्ट थई जय छे. धर्मणण वगरतुं डेवण भुद्धिणण शुं कार्य करी शके छे ते सहु डैहुने अत्यारे प्रत्यक्ष थई रह्यु छे. ओक वर्षतनी आह्य सुखनी सहायक भुद्धिनी प्रशंसा करनाराच्छो आजे ते ज भुद्धिने संहार स्व-इपवाणी नेहुने वणेऽही रह्या छे, धर्मणण

भूठी पडवाथी भुद्धिणणना कार्यक्षेत्रमां धाणी ज अन्यवस्था उभी थई छे. विनाशमां पणु आणाहीनी आशा राखनारा भुद्धिशाळीचो. पोतानी भुद्धिने विनाशना पंथे वाणी रह्या छे, पणु आचीन अथवा तो अर्वाचीन धर्मणण वगर विनाशमांथी आणाही मणी मुळकेत छे. यद्यपि विनाशनी लावना अक्षुद्य उत्तमावाणी थई शक्ती नथी, तो पणु आचीन पुन्यभणथी ओक वर्षत विनाशक पणु पोताना कार्यमां विजय भेणवी शके अरो परंतु परिणामे ते ज विजय घराज्यना इपमां फैरवाई जय छे. विनाश स्वरूपथी ज विपत्तिनो विकासी छे; पणु संपत्तिनो तो विनाशक ज छे, अने ओटका माटे ज विनाशनी लावनानुं वर्तुण विशाण थवाथी आपत्तिनो अंत शीश आवी शके तेमनथी. धीजना विनाशनी लावना ते वहेली भेडी घोताना ज विनाश माटे थशे, कारणु के अरसपरसनी विनाशनी लावना समथ मानव-समाजमां व्यापी ज्वाथी सामुदायिक लावनाभणथी मानवी मात्रने आपत्तिविपत्तिना भाणी अनवुं पडशे. धीजना तरह फूर्क्ष राखीने डेवण पोताना ज माटे करवामां आवती लावनाथी व्यक्तिगत अचाव थई शक्तो नथी पणु समष्टिना अचावनी लावनाथी आपत्तिविपत्ति लय आभी जहुने सर्वनो अचाव थई शके छे, माटे सर्वना श्रेयमां ज पोतानुं श्रेय समायलुं छे, सर्वना सुणमां ज पोतानुं सुभ समायलुं छे आवी हठ शक्ताथी शुद्ध अंतःकरणपूर्वक सर्वना लक्षानी लावना ज उपस्थित थयेला हुःअह प्रसंगने हूर करी शांति करवाणी थशे.

संग्राहक ने शोब्जः : अा. श्री विजयरामचंद्रसूरिल्लाप्रशिष्य
मुनिश्री पुष्टविजयल्ल (संविजपाक्षिक)

तात्त्विक उपहेश वचनो ।

(गतांक पृष्ठ २५५ थी शह.)

७६. कोईपिण्ड आणतमां ओळंत आथडु
ने थर्हि ज्ञय तो पक्षात् साच्चा सत्यनो
निश्चय करवानी शक्ति प्राप्त थती नथी. दृष्टि-
रागांची वा भूढाताथी भनुष्य हेवशुरुधर्मानी
परीक्षा करी शक्तो नथी.

८०. केना मनमां संवेग थयो. हेय
छ, ते अनासक्तिथी कर्तव्य कर्माने करतो
छतां निर्वेद रही शक्ते छे. संवेग थया विना
हेहाध्यास टप्तो नथी. तथा नामरूपमांथी
अहंभगताध्यास टप्तो नथी अने तेम
संवेग प्राप्त थया विना आत्मिक सुखनो
निश्चय थतो नथी.

८१. संवेग ए कंधि अन्नरमां भणती
चीज नथी, पणु आत्मपरिणाम विशेष ज छे.
संसार उपर निर्वेद (साच्चा कंठाणो) थवो
ने मोक्ष उपर खरेखर अनुराग थवो ते ज
संवेग छे.

८२. सर्व नय सापेक्ष ज्ञान प्राप्त थवाथी
धर्मशास्त्रामां प्रगटां अनेक विरोधी शमे
छे, अने मिथ्याज्ञान तथा रागद्वेषनो पणु
उपशम थाय छे. सहशुरु सर्व नयोनी अपे-
क्षाए सर्व धर्मदर्शनो समन्वयाने शिष्यने
समर्पे छे, त्यारे शिष्यमां धर्मानी योज्यता
प्रगटे छे.

८३. विश्वमां प्रवर्तित सर्व धर्मना
भूत सिद्धान्तानुं स्वदृप अनुलब्ध्याथी तथा
सर्व धर्मोनी वृद्धिमां हेतुओनो अनुलब्ध

क्योशी सर्व धर्मप्रवर्तक विचार आयारोनी
कुशलता प्राप्त थर्हि शक्ते छे.

८४. सर्व धर्मना सिद्धान्तोनी मान्यता-
ओने सापेक्षपणे समजनार तथा वर्तमान-
कागमां धर्मप्रवर्तक मान्यताओने तथा
प्रवृत्तिओने सापेक्षपणे समजनार धर्मानी
अने धर्मीयानी वृद्धि करी शक्ते छे.

८५. विश्वतीं सर्व धर्मोमां के जे
सत्य सार छे, ते सर्वतः वीरप्रभु अतिपादित
वेद-वचनो छे, एम जाणी सर्व धर्मना
सत्य सारने के थहुणु करे छे ते सत्य
जानी जनी शक्ते छे.

८६. सर्व धर्मोमां पक्षपात विनानी
दृष्टिए हेहवामां आवे तो सत्य सार कंधि ने
कंधि हेय छे. तेनो अपवाप के करतो नथी
ते शुरुनी योज्यताने प्राप्त करे छे. संपूर्ण
सत्य सार तो एक वीतरागकथित धर्मानी ज छे.

८७. जे स्याहवादक्षियाने अनेकान्तदृष्टि
प्राप्त थाय तो अनेक नयोनी सापेक्षताओ
सर्व धर्मांथी सत्य थही शक्य छे.

८८. आ विश्वमां ज्यां त्यां सत्य थणु
छे, एम वीतराग सर्वशेष ग्रहणे छे.
सत्यना अंशो विना कोई धर्म विश्वमां लुवी
शक्तो नथी. हिंसा, मिथ्या मान्यता विग्रे
असत्य पणु हेय छे, परंतु जानी पुरुष
हुंसनी दृष्टि धारणु करी असत्य धर्मने मूळी
सत्यने थहे छे.

[२८०]

श्री आत्मानंद प्रकाश.

८६. विश्वमां राजसन्ताथी के शांति थती नथी ते धर्मसन्ताथी थाय छे. आत्मधर्म शुद्ध अह्मस्वद्वप्तुं ज्ञान कर्नीने के अन्य भनुष्योने उपदेश आपे छे ते विश्वनी वा देशनी उप्रतिनो ग्रन्थार्थ अनी गुरु नामने दीपावनार अने छे.

८०. नेम नेम रागदेषनो उपशम थाय छे तेम तेम न्यायप्रियता भीलती लय छे. न्यायप्रिय भनुष्य सत्य धर्मने अही शके छे अने असत्यनो त्याग करी शके छे. ने भनुष्य न्यायप्रिय होतो नथी ते रागदेषना पक्षपातमां पडे छे.

८१. स्वाध्याय एट्ले स्वनो अध्याय एट्ले आत्माना स्वद्वप्तुं चित्तवन. 'हुं काणु छुं? मारुं स्वद्वप्त शुं? मारुं कर्त्तव्य शुं? मारुं साध्य शुं?' आना विचारो करवा के आत्माना स्वद्वप्तने लगतुं वांचन करतुं ते स्वाध्याय कहेवाय छे.

८२. आपणे थीजना आशयोनी तुलना करवामां धाणी वार भूल करीछे छीअ. आपणे अभुक कार्य नेहिये छीअ, पण ते कार्य करवानो तेनो आशय जेता नथी.

८३. कोळना एकाद सामान्य निर्भास भागने होअी तेना आभा चारित्रनुं भाप काढवुं योग्य नथी.

८४. भूलने वश भनेलानो तिरस्कार करवो. ते योग्य नथी, केम्फे त्यां तेमनो होअ नथी. पूर्वनो प्रथम संस्कार तेना वेगनी दिशामां उठपथी गति करतो होवाथी ते सामे ठङ्कर जीली ओला रहेवुं ए गमे तेवा मुरुधार्थी आत्माओ. भाटे अशक्य अने असंलवित छे.

८५. हरेक कार्य भूतकालमां थथेला कारणतुं कार्य छे, अने ते ज कार्य भविष्यमां थवाना कार्यतुं पाणुं कारण थाय छे. आ प्रभाणे जेतां हरेक कर्म एक रीते कार्य छे अने थीजु रीते जेतां कारण छे. आ रीते कार्य मावने कार्य कारण संभव्य छे.

८६. प्रबन्ध्या भाव अहंकृ उत्तराथी ज संतोष भानी ऐठेला, ऐडो पार थई गये तेवुं समज ऐठेला अने योग्य करणीयी पशाहमुख अनेला, शिथिलाचारी थई गयेला, विविध कथा के छापां वांचवामां ज सभयनो हुव्यंय करनारा, डेवण शारीरिक शुश्रूषामां ज लयलीन, आवश्यक कियामां पण शिथिल अनन्नारा, लव्य ज्ञाने उपदेशवा छतां य आत्मानी सामे दृष्टिपात नहि करनारा अने थीजु अनेक जिज्ञासाथी विरुद्ध आचारने सेवनारा वास्तविक साधु तरीके गणी शकाता नथी.

८७. साधु तरीके ते ज गणी शकाय के यथाशक्य द्रव्य, क्षेत्र, काण, भावानुसारे यांये य आचारपालनमां तत्पर, यांये य समितिथी समित, नेमनी धृद्रिये। विषयजन्य विकार्त्ती सुझत छे, नेमणे श्राडा पण भनेनिश्च उर्ची छे, के स्वाध्यायाहिमां-आत्मचित्तवनमां तत्पर छे, के दोकेषणा, दोकहेरी अने दोकसंज्ञाथी सुझत छे, के सहशुरनी आज्ञाने-लगवाननी आज्ञाने आधीन छे अने उपर कथित होवो. जेनामां नथी ते ज साधु तरीके गणी शकाय छे.

८८. मुनिमार्ग महाकष्टकारी छे, वेगुनां कोणीया चाववा ज्वेवो छे, तत्त्वारनी धार पर चालवा ज्वेवो छे ए शंका विनानी वात छे, परंतु एक वप्त ए भागनी इरजे भागे

तात्त्विक उपदेश वचनो।

[२८१]

लीधा पछी तेने अनुसारे वर्तन करवाने आ लुप्त प्रतिज्ञाथी अंधाय हो; एटलुं ज नहीं पथु ते धोरण्युथी ने जरा पथु पाछो पडे तो महाकर्मधारे हो.

६६. आत्माना आ लव ने परबरवना सुख माटे वेष अने वर्तननी ऐक्यता करवानी खास ज़रूर हो.

१००. जे पुरुषो अनाचाराद्विक पोताना दृष्टाने आत्मप्रशंसाहि स्वार्थना रक्षणु माटे अपवाप करनारा पोताना भनमां एम धारे हो—“हंलवडे तेने हांकवाथी भारी शुभी तरीके भयाति थशे, अने लक्तजनो पात्र आहाराद्विके करीने भारी सत्कार करशे डेमडे लोके शुण्यवाननी पूजा-सत्कार करे हो तेथी भारुं पणु लोकामां गोरव थशे अथवा महापुरुषोनी पंक्तिमां भारी प्रतिष्ठा थशो:” आठवा ज लालथी संतुष्ट थवेला ते भूर्भु-शिरोभूषु हंलवडे ज कदर्थना पामे हो अर्थात् पोताना आत्माने बिली विडंधना पमाडे हो. (पूज्य उ. म.)

१०१. जे म असती (कुलटा) “स्त्रीओनुं शील अशील(हुष्टाचार)नी ज वृद्धिने माटे थाय हो तेम हांलिक जनोने अवतनी ज वृद्धिने माटे थाय हो. (पू. उ. म.)

१०२. जे ज कारणु माटे जे जे साधु भूलेतर शुष्णुने धारणु करवा समर्थ न होय तेने सतशावकपथुं ज युक्त हो, पणु हंलवडे ज्ञवु युक्ता नथी अर्थात् भ्रष्टपणु चारित्र पाणवा करतां आवकधर्म पाणवा श्रेष्ठ हो. (पू. उ. म.)

१०३. भूल अने उत्तरगुणु संधंधी झूष्णु सेववानी हिन पर हिन वृद्धि थतां जे

डॉर्थ पथु प्रकाशनी साध्यदृष्टि न रहे ने तेथी विरुद्ध आचरणु थाय तो सर्वथा भनुष्टभव एणे शुभाववा करतां पू. उ. म. ना कथनानुसार शास्त्रोक्त ग्रन्थारे वेष छोडी हो, उत्तम श्रावकपथुं अंगीकार करी लाई जन्मनुं साक्षेप करवुं हितकारी हो.

१०४. श्री जिनशासनने विषे अखंत रागवाणे मुनि ने लिंग(वेष)नो त्याग न करी शके तो तेणु दंस रहित सुसाधुनो सेवक थई संवज्जिपक्षिक थवुं युक्त हो. (पू. उ. म.)

१०५. वेष छोडवाथी आत्मानुं भगवी ज्यो तेम लागे अगर वेषनो आश्रह छुटे नहीं तो उपरोक्त ते ज महात्मांचे भतावेला मार्गने अनुसरी संवेगपक्ष धारणु करीने पणु आत्महितनी दृष्टि चूक्णी नहीं अने निःशुक के अति प्रभावी थई साध्यदृष्टि रहितपणु अनंतो संसार उपार्जन करवो नहीं.

१०६. जे ए पंच महावतोनुं द्रव्य, शेत्र, काण अने लावने अनुसारे अतिचार रहित पालन करवामां पोताना असमर्थ-पथुने जे डॉर्थ शठ पुरुषो ग्रगटपणु जाणुतां छतां पणु दंस-मायानो आश्रय करीने पोतानुं मुनिपथुं कडे हो एटले “ अम साधुओ ज छीमे ” एम कडे हो ते हंलीओनुं नाम पणु पापने माटे थाय हो ते पछी तेमने वंदना, स्तुति के सेवा करवाथी पाप थाय तेमां शुं कडेवुं ? (पू. उ. म.)

१०७. जे ए साधु वेषधारी हांलिको सारी अने पांचमा आराने अथवा वयने उचित-योग्य एवी यतनाने-संयमकुञ्चाने एटले ग्रतना रक्षणुने करता नथी ते अहो !

[२८२]

श्री आत्मानंद प्रकाश.

भीटुं आश्रये छे. आ राज विनानुं राजन्य लुप्तो। के जेथी ते दांबिडो मात्र साधुना नामे करीने ज आ जगतनी अव्य-लुप्तोनी वंचना करे छे एटले के तेजोने छेतरीने अन्न-पञ्च-पात्र-द्रव्यादिक्तुं हरणु करी तेमने दूटे छे. (पू० ७० म०)

१०८. लग्वान तीर्थ-करोने कोई पथ अहिंसादिक कार्यनी सर्व प्रकारे एकांतपणे “अमुक कार्य ज करवुं” एम अनुशा आपी नथी अथवा कांઈ पथ आधाकर्मादिक कार्यनो एकांतपणे निषेध पथ कर्यो नथी एटले “अमुक कार्य सर्वथा न ज करवुं” एम कल्पुं नथी, परंतु कार्य प्राप्त थये छते निषेध करेलुं अथवा अनुमति आपेलुं कार्य करती वर्खते दंस रहित थवुं ए प्रभाणे लग्वान जिनेकरनी आज्ञा-आगमवाणी छे.

१०९. समक्ति, देशविरति के सर्व-विरतिना गुणो चेताने हिन पर हिन विशेष

लाववा भाटे सर्व अव्य लुप्तो ते सर्व शुष्णोनो उत्सर्गभार्ग नेहि विचार करवो नेहि. उत्सर्गभार्गमां घण्टा लाजे चेताना हृदयनी स्थिति केवी छे जे ज विचार होय छे अने धीन लुप्तो समक्ति, देशविरति के सर्वविरतिवंत के चारित्रिवंत छे के नहि तेनी परीक्षा तेना आहा आयरण उपरथी करवानी होय छे.

११०. जे एम न थाय तो अद्य ज्ञान-दशाने लीघे चेताना भाटे अपवाह मार्ग विचार करता सर्व चेताना आत्माने शुणु-निष्पत्त मानी ले, अने धीनने भाटे उत्सर्ग भार्ग परीक्षा करवा जतां धीनतेतुं हृदय विशिष्ट ज्ञान सिवाय छवस्थेने गम्य न होवाने लीघे कोई पथ धीन शुणी मातूम पडे नहि.

(चालु)

वीरप्रभुनी स्तुति

(राग-भीठा लाज्या छे भने आज्ञा जिज्ञासा.)

हीठा भद्रावीरने आनंद जिज्ञासा, वीर प्रभु ज्यकारी रे, केवणजाने वरीया. १
धातीकर्मनो नाश करीने, पाभ्या प्रभु केवणजान रे, केवणजाने वरीया. २
पथ रत्नोनी जतना करीने, करता मंगणमाण रे, केवणजाने वरीया. ३
लैन शासननो इक्को अनलवीयो, अहिंसा परमोदर्म स्थापीयो, केवणजाने वरीया. ४
आत्म ते परमात्म साच्या, निर्गति सिद्ध समान रे, केवणजाने वरीया. ५
संप्रति शासन भद्रावीर जगाडीयु, शासननो ज्यकार रे, केवणजाने वरीया. ६
जन्मभरणुना झेरा रथीया, पाभ्या मुक्ति मोआर रे, केवणजाने वरीया. ७
केवणजाने वरीया. ८
लक्ष्मीसागर कुडे अजितवीर साच्या, मुक्ति विना सी काच्या रे,

केवणजाने वरीया. ९

—सुनिराजश्री लक्ष्मीसागरल महाराज

લેખક : મોહનલાલ દીપચંહ ચોકરી

પેલો ડિગાંખર સાધુ !

(ગતાંક પૃષ્ઠ ૨૩૮થી શર.)

‘વાતને વા કઈ જાય છે’ એ ઉક્તિ મહંત અને રાજવીની મુલાકાત સંખ્યમાં તો સાચી પડી. હેવી શું બોલશે ? અને પરિણામ કેવું આવશે ?’ એ પ્રશ્નોએ સારા ચ નગરનું વાતાવરણું સંકુળધ બનાવી મૂક્યું. જાતજાતના તર્ક-વિતર્ક શરૂ થયાં. કલ્પનાસૃષ્ટિમાં સહાયેલા વિવિધ રંગી મણુકા ગ્રનના મનોપ્રદેશમાં શીંગ ગતિએ ફરવા માંયા.

પણ જેના શિરે રાજ્યનો ભાર છે અને જેની પ્રાર્થનાથી હેવી સંદેશ આપવાની છે એ પદ્ધતાલ રાજવીની નિદ્રા જ જીવી ગઈ. સારી ચે રાત વિચારવભળમાં પસાર થઈ એમ કહેવામાં અતિશયોક્તિ નહીં કહેવાય. સૌ પ્રથમ તો વિચારે જ એ આવ્યા કે ચોતાનાથી હેવીની પૂજાલક્ષ્મિતમાં કંઈ દખલના તો નથી થઇને ! કોઈ જાણુતા-અજાણુતા અપરાધ તો નથી બન્યોને ! અને શાંકાના નિરાસન અર્થે તો એણે છેદ્ધા પંદર વર્ષનો ગત ભૂતકાળનો ચોપડો ડકેલી વાજયો. અથીતું ગયા પંદર વર્ષમાં હેવી કુપિત ન થાય અને એની કૃપાદિ બની રહે એ સારુ પોતે શું શું કશું હતું અનો ફરમશઃ વિચાર કરી દીધો. સ્મૃતિરૂપી એ અરીસામાં અવલોકતાં એણે જણાઓયું કે-કાળી માતાની લક્ષ્મિ અર્થ-પ્રીતિ સંપાદન કરવા માટે પોતાની કુળમર્યાદા છાડી પશુખલિ હેવાને રિવાજ પોતે શરૂ

કર્યો હતો. શ્રી મહિનાથ પ્રભુના દર્શને જવાને તેમ જ પૂજન કરવાનો રવૈયો સહંતર અંધ કરી દીધો હતો. અરે ! છેદ્ધા પંદર વર્ષમાં મંદાર ટેકરીના એ પવિત્ર દેવાલયવાળા ભાગ પર પગ સરખો પણ મૂક્યો નહોતો ! અને જે આવકના સાધનો શ્રી મહિનાથ દેવાલયના નિસાવ અર્થે ચોજ્યા હતા એમાંના કેટલાક અંધ કરી ફર ચીધા હેવીમંદિરના પર્યા માટે વાળી દીધા હતા ! પુરોહિત માણેકદેવને તો રાજગુરુ જનાવી ફર, જનતામાં એની મહત્ત્વાની અતિશય વધારી દીધી હતી ! આટાટાટાટા શુભ કામો કરવા છતાં એવું તે કશું કારણ બન્યું કે એકાએક હેવી સંદેશ દેવા આતુર બની ! પ્રસન્નતા દાખવાને બદલે સંદેશ આપવો એ મનને પ્રફુલ્લિત કરવા કરતાં ભયજનક વધુ કરે છે એ વાત કોણું નથી જણાતું ?

કુદરતના ચક્રો અસખિત ગતિએ વદ્ધા જાય છે. એના કાર્યમાં અવરોધ કે અડચણું જિલ્લા થતાં જ નથી ! રાજવીને જીધ આવે કિંબા ન આવે, તેથી નિશા થોડી જ દાંખાવધાની હતી ! ચોગ્ય ઘટિકા પસાર થતાં જ અંધારપટમાં અંશુમાલિનીના કિરણોએ ગાખડું પાડયું. જેતનેતામાં એ વખવા લાણ્યું અને આપરે એકહથ્ય સામ્રાજ્ય સ્થાપી દીધું. અંધકાર કયા ખણુમાં ઉદ્દેચાયો. એ જાણી પણ ન શકાયું. પ્રાતઃકાળનો સ્પુર્તિર્દાયી વાચુ વાતાં જ જનસમૂહ-

[२८४]

શ્રી આત્માનંદ પ્રકાશ.

ની શિથિલતા હુર થવા માંડી. રાજ પદ્મનાલે શથાનો ત્યાગ કરી સત્ત્વર હંતધાવન આદિ કાચેં પતાવી લીધા અને આડખર-પૂર્વક હેવીમંહિરે જવાની તૈયારી કરી. હિવસ આપો યે પૂજામાં વિતાવવાનો હતો. એ વિધિનો અંત સંદ્યાકળે આરતી કર્યા બાદ-અલિ ચદ્રાબ્યા પછી જ આવવાનો હતો; એટલે બીજી જરૂરી ખાદ્યસામની પણ નેકરો મારકૃત મંહિરમાં પહેંચતી કરવામાં આવી. નૃપતી સ્વારી પણ સમયસર ત્યાં આવી પહેંચી.

આત્મ અને ધર્માનાદના ગગનસેતી નાદીથી મહિરસું વાતાવરણું ગંભીર બન્યું. આરતી પૂરી થઈ અને પ્રસાદ વહેંચાયો. પુરોહિત માણિકદેવની આજા અતુસાર એકત્ર થયેલા સર્વ મનુષ્યો મંહિરની બહાર નીકળી ગયા. ઘડીપૂર્વે ગાળુ રહેલ રંગમંડપ એકએક શાંત અની ગયો. મહિમાં વસનાર થોડાક શિષ્યો અને સેવિકા ઉપરાંત પૌરજનમાંથી ત્યાં કોઈ રહ્યું નહોંતું. પુરોહિતે હાક મારી-નરસિંહ. નરસિંહ નામા એક શુવાને કર જેડી શુરૂ-હેવ સમક્ષ આવી કહ્યું :

‘સેવકને શ્રી આજા છે ?’

‘જ, મંહિરના દરવાજ ચોક્કસ કરી બાંધ કર. મહિમાં કથી પણ ગરખડ ન થાય તેવો બંધોણસ્ત કર, કેમકે આજે મહારાજ દેવીને પ્રક્ષ પૂછી ખુલાસો કરવા સારુ તૈયાર છે.’ માણિકદેવે નરસિંહને ઉપર મુજબ આજા સંલગ્નાવી, નેત્રસંક્રિત કરી વિહાય કર્યો.

નરસિંહના કમાડ બાંધ કરી વિહાય થયા પછી માણિકદેવ રાજ પદ્મનાલને લઈ ગલ્લ-

ગૃહમાં દાખલ થયો. રાજએ પગ મૂકૃતાં જ હેવીની કે સુદ્રા જોઈ એવી પૂર્વે કોઈ વાર જેવામાં આવી નહોંતી. મહાકાળીની વિકાળ મૂર્તિ, પોતાના આઠ હાથમાં નિરાળા શસ્ત્ર ધારણું કરી ગળામાં નરમુંડોની રક્ત નિતરતી માળા પહેંચી જણે સાક્ષાત् રણથંડીનો અવતાર ધરી સામે ખડી છે. આ લય-કર મહામાયાના સ્વરૂપને જેતાં જ રાજવીના ગાત્ર ગળવા માંદ્યા, નસો ઢીલી પડી, છાતી બેસી ગઈ. માતાની સમક્ષ ધરાવેલ પશુ-ભલિના દોહીમાંસથી અહેણો ફેલાઈ રહી હતી અને વાતાવરણુમાં નિર્દ્દ્યતા અને લીધણુંતા નાચી રહી હતી. એમાં ધૂપની વાસ તો કયાંય દૂધી જતી. લય-કરતા ને લયાનકતાનું એક-ધારું સાંપ્રાણ્ય વ્યાપ્તું હતું. રાજવી એકાઢા સુતળા માઝેક જ્યાં પુરોહિતની હોરવણી પ્રમાણે પ્રાણામ કરતો જોસો રહ્યો ત્યાં તો માણિકદેવે દોહીમાં આંગળી ઓળિ એ વડે તેના કપાળે તિલક કર્યું અને રાજવી તરફથી નિમન પ્રક્ષ કર્યો : ‘મહાદેવી, આ રાજ્ય પર જલ્દીથી સંકટ આવનાર છે એવા જેણી અવાજમાં શું રહ્યું સમાચેતું છે એનો ખુલાસો મેળવવા નગરપતિ પોતે અહીં હાજર થયેલ છે. એવી તે કઈ કસુર થઈ છે કે આપ ડોપાયમાન થયા છો તે કહેવા આપના એ સેવક પર કૃપા કરશો.’

થોડી ક્ષણુમાં જ હેવીના સુખમાંથી અવાજ નિકળી રહ્યો હોય એવો ભાસ થયો. જે કે દીલો-એમાં તેલના આંખા દીપકો ખળતા હતા છતાં ગલારામાં જે બંધકારની કાલિમા અને લીધણુંતા છવાઈ હતી એમાં પેલા દીવડાના તેજની કંઈ જ અસર નહોંતી.

ચેલો હિગંબર સાધુ !

[૨૮૫]

“ રાજુ, તારી મારા પ્રત્યેની લક્ષિતમાં કંઈ અંતર ફડયું નથી, પરંતુ તારા નગરમાં એક નિર્ણય આવીને અહિંસાનો ઉપદેશ આપી રહ્યો છે અને એ દ્વારા સંખ્યાખ્યાંધ લોકોના હૃદયમાં જે નવી દિશા પ્રતિનું આકર્ષણીય વધારી રહ્યો છે એ ટીક નથી થતું. જનતાની ભાવના અદલતાના માંડી છે. એ જ કારણુંથી રાજ્ય પર મોદું સંકટ આવનાર છે. જે અત્યારથી જ એનો પ્રતિકાર ડરવામાં આવે અને નિવારણના ઉપાય હાથ ધરવામાં આવે તો પરિસ્થિતિમાં જરૂર સુધારો થાય.”

અવાજ તો બંધ થયો. મહારાજને પણ એનો અક્ષરે અક્ષર અરે લાગ્યો. અંધશ્રદ્ધ ખૂરી ચીજ છે. આટલું જાણું અધૂરું હોય તેમ માણિકદેવે એમાં મરચું-મિઠું ઉમેયું. મંદિરથી નીકળી જયારે રાજીવી-એ નગરનો માર્ગ લીધો ત્યારે તેના સુખ-માંથી એક જ પ્રવોષ પ્રગણ્યો. “ સર્વ સંકઠું ભૂળ ચેલો હિગંબર સાધુ ! ” પુરોહિતના હર્ષનો તો પાર નહોંતો. રાજના સીધાવી ગચ્છા પણી હસ્તો હસ્તો તે મઠમાં પાછો ઝોંચો અને સહુસા બોલી જાયો. “ જરૂર એડો પાર થવાનો. એ હિગંબર સાધુનું આવી બન્યું. દેવીભક્તાના પરચા સામે કોણું ટકી શકવાનું ? ચેલો સાધુ ભાગી ગયો તે ભાગી ગયો ! પુનઃ એના હર્ષન આ ધરતી પર થયાં જ નથી. ચૌહ વર્ષે આ કોઈ નચો કુરી નિકળ્યો ? શૈગ અને શત્રુને જીગતા ચાંપી હેવા સારાં. વધે તો ભારી પડે ને ? એ બદ્ધાળુની

અહિંસા હવામાં જોડવાની ! કયાં તો ભાગવું પડેશે અને નહિતર લંસમીભૂત થવું પડેશે ! નાગાભાવા એ જ હાવના ! આ માણિકદેવને છાંછેડવો સારો નથી ! શુરૂહેવ, શું અગાઉ પણ ડોઈ સાધુએ માતાળુની સામે ચેડા કહ્યાંદ્યા હતો કે ? ”

“ અરે ! સાધુઠામાં તે આવી હિંમત કયાંથી હોય ? આ તો મહારાજ પચનાસે દેવળ અંધાવનું શરૂ કર્યું ત્યારે એક શ્રમણ અહીં હતો. એણે અહિંસાનો ઉપદેશ આપવો શરૂ રાખેલો, એટલે પ્રભજનમાં જોએ અહિંસાધર્મી હતા તેઓ રાજના કાર્ય પ્રત્યે જોડળી જાયા, પણ માતાળુએ રાજને પુત્રીના જન્મદેયે પરચા. અતાવેલો એટલે એ પેસા પામરોની પરવા કરે અરો ? એણે તો અહગપણે કામ ચાલુ રાખ્યું. પૂર્વ-નેની સ્મૃતિ કે નજ સાધુનો હ્યા સંબંધી ઉપદેશ એને પોતાના નિશ્ચયમાંથી ફેરવી શક્યા નહીં. દલીલબાળ નિરસ્થક નિવડી. રાજને અલિલિધાનમાં વધારો કર્યો. એ સામે જે એક જણે વિશેષ ઉદાહર્ય એનું ધર અળી ગયું અને જે કંઈ વસ્તુ જણુસ હતી તે લુંટાઈ ગઈ ! આથી પ્રભમાં માતાળુની સચોટ છાપ બેઠી. ભીતિ તો એટલી વધી ગઈ કે કોઈ રખાખણા સિલાયનો મોટો ભાગ કાળીહેવીનો લક્ત બન્યો. પેલો સાધુ તો પોણારા ગણી ગયો. તે પુનઃ હેખાયો જ નહીં ! ”

એ વાતને વર્ષોનાં વહાણું વાયાં. સાચી વાત તો એ હતી કે પુરોહિત જે સુનિને

[२८६]

श्री आत्मानंह प्रकाश.

लाभी गथा जणुवता हुता ते मुनिने 'योतानी चक्षु समिप हिंसाने ज्ञेयथी ग्रव-
तांती ज्ञेय सभत आधात लाभ्ये। हुतो।
आ रीते अहिंसाना अणुभूता तत्त्वतुं झून
ज्ञेमनाथी ज्ञेयुं ज्ञतुं नडेहुं पणु लाचारी
अे हुती के चोते वृद्धावस्थामां पांगरी यूक्त्या
हुता। उपासकवर्गमां चेतना ग्रसरावे तेवी
शक्ति इरावी शके तेम हुतुं नहीं एट्टेज
ते अे। त्यांथी विहार करी गंया। आ
स्थान तेमनी चक्षु समिप सहैव रमतुं हुतुं
अे वेणा अमरकीर्ति मुनिनो ग्रसाक सवि-
शेष गण्यातो हुतो। ते ग्रसाविक स्त्रूनि सह
प्रथम मेणाप थतां ज चेता धरडा साधुने
मविलपुरना ग्रसंगने माटे अे योग्य जणुया।
तेमनी समक्ष सारी य परिस्थिति वर्णुवी
भतावस्थामां आवी। साथ्यासाथ त्यांनी पद-
रायेदी राजवीनी भनोहशा अने लयत्रारत
प्रबन्धनी किंकर्त्तव्यभूढ दशा पणु जणुव-
वामां आवी। उद्धार करवा लायड झेव छे
अे जेम साचुं छे तेम ज भाषिकदेव जेवा
हिंसाना हिमायतीनो। उधाडे छागे सामनो
करी जनताना भानसने अहिंसाना मार्गे
वाणवामां ओळुं जेखम नथी रहेहुं अे
वात पणु एट्टी ज साची छे। नृप चेते
अंधश्रद्धामां लीन छोवाथी न्याय-अन्याय
तोतनार डोळ छे ज नहिं। अथी ज जे

व्यक्तिए डेड कसवा हिंमत करी तेहुं घर
आणी ढेवामां आ०युं अने धरवभरी दूंटी
बेवाई। आनणी रीते गोठवेल आ प्रपंचने
माताना परवा तरीके प्रसिद्धि अपाई!!
वृद्ध श्रमणुना मुण्ये मविलपुरनी वर्तमान
स्थिति श्रवणु कर्या पछी आचार्य अमर-
कीर्ति धैर्य धारणु करी जे वयनो योव्या अे
ते काणे जेटला साचा हुता एटला आने
पणु छे अने हरकेई मुनिने हुद्यांकित करवा
जेवा छे। 'अहिंसानो सहेश जगतना ल्लोने
पडेंगाऊवामां जेखम तो रहेहुं ज छे, तेमके
जनतानो मोटो आग अज्ञान व्याधिथी
पिठाय छे। स्वार्थी शुरुव्यो तरक्ती अने
अनेक वार हिंसा अने मारक्काडमां ज स्वमान
ने सत्त्व समाचेला छे अवा वयनोहुं
पान कराववामां आ०युं होय छे, पणु समता-
रसतुं पान करनारने रागदेष्टुं उन्मूलन करी
डेवण समलाक धारनार श्रमणुने श्री महा-
वीरहेवनो पयगाम विश्व सन्मुख धरवामां
भीति डेवी ? जेखमना विचार शा ?
'सवि ल्लव करुं शासनरसी' अे हयातुं
कथन प्रक्षुतुं अहूं जे साचे ज अंतरमां
जितयुं होय तो। 'कार्यं साधयामि वा देहं
पातयामि' नो ज निर्धार होय.

(चालु)



શ્રી મુનિસુંદરસૂરિ.

ક્રેખક: ભોડનલાલ દાલીયાંહ ડેશાઈ
B. A. LL. B. Advocate.

(ગતાંક પૃષ્ઠ ૨૬૬ થી શર.)

૧. ચતુર્વિંશતિ શ્રીજિનાશીવોદ્રિપ-' જય-
શ્રિય જ્ઞાનતપસ્ક્રિયાયુદ્ઘે; શ્રી શાઢ થતું ૨૭
શ્રોણિતું, ૨ શત્રુંજ્યમંડન શ્રીઆહિનાથસ્તવરૂપ
જયશ્રિય પ્રાપ્ય કુકમ્બવિદ્વિષાં થી શાઢ થતું ૨૭
શ્રોણિતું, ઉ ગિરિનારમૌલિમંડન શ્રીનેમિનાથ-
સ્તવરૂપ જયશ્રિય વિશ્વજિતં સ્મરદ્વિષં થી આરં-
ભાતું ૩૩ શ્રોણિતું, [આ થીલું ને ત્રીજું સ્તવન
'સ'. ૧૪૭૬ વર્ષે 'સ'. દેવરાજ સં. હેમરાજ
સં. ઘડચિંહના સુવણુંના કલશ અને છત્રચામ-
શાહિશી શે. અલિત ત્રણ પ્રોટ જિનાલયાદિ સામ-
શ્રીથી સમુપેત સંધનો સાથ હતો. ત્યારે રદ્ધું
છે—સંવત ૧૪૭૬ વર્ષે, એતતુ સ્તવનદ્વયમપિ,
સં. દેવરાજ સં. હેમરાજ. સં. ઘડસિંહ સંધસ્ય
સૌર્વણીકલશચલ્લત્રચામરાધુપશોભિત—પ્રૌદ્ધશ્રીજિના-

૧. અગાઉ જણ્ણાંથું છે કે સોમસુંદરસૂરિએ
મુનિસુંદરને સૂર્યપદ વડનગરમાં આ ત્રણ બાધ્યો
પૈકી દેવરાજે ભાધશ્રોણી સંભિતથી કરેલ ઉત્સવ-
પૂર્વક આયું. પછી દેવરાજે સંધપતિ થઇને
મુનિસુંદરસૂરિ સાથે શરૂંજ્ય અને ગિરિનારતી
યાત્રા કરી. ધર્મસાગર આ સૂર્યપદનું વર્ષ સં. ૧૪૭૮
આપે છે, ન્યારે આ યાત્રાનું વર્ષ સં. ૧૪૭૬ તું
કર્તાં આપે છે તો તે અને વર્ષ પૈકી કર્તાંએ આપેલ
સં. ૧૪૭૬ તું વર્ષ વધારે સાચું ગણ્ણાંથું ધરે. એ
વાતને સં. ૧૪૭૮ ના પોષ શુદ્ધ પાંચમના મેવાડ
રાણું મોકલહેવના સભયના ઉપર આપેલ કોખમાં
ગણ્ણાવેલા સૂર્યશ્રોણીઓં પહેલો નંબર મુનિસુંદરસૂરિને
અપાયો છે તેથી ટેકા મળે છે.

લયત્રયાદિસામગ્રીસમુપેતસ્ય સાર્થેન કૃતં તૈર્વેવાન
વન્દમાનૈરેવ-એમ કર્તાંએ શ્રીજિ સ્તવનના અંતે
જણ્ણાંથું છે], ૪ સોપારક (સોપાર) તીર્થનાથ
શ્રીઋષ્ટલહેવસ્તવરૂપ જયશ્રીસઙ્ક્રિનઃ પૃથ્વીં ના
આરંભસાગું ૨૫ શ્રોણિતું, ૫ વૃદ્ધનગર (વડનગર)
અલંકાર શ્રી ઋષ્ટલહેવતું જયશ્રિયાડ્વારો ભરતા-
વિનેતાની આદિવાગું ૨૭ શ્રોણિતું, ૬ અયું-હ-
ગિરિ (આયુ) શ્રીઋષ્ટલતું બ્રેયઃશ્રેणિનિદાન થી
શાડ થતું ૨૮ શ્રોણિતું, ૭ લુરાપદ્ધી (લુરાધાલા)
શ્રીપાશ્ર્વાંતું જયશ્રિય સર્વરિપૂરુણ જિગીષતાના
આરંભસાગું ૩૩ શ્રોણિતું, ૮ સ્તવભનકાવતાંસ
(થાંલણા યા ખાંલાતાના) શ્રીપાશ્ર્વાંતું જય શ્રી-
સ્તવભનાધીશ થી શાડ થતું ૨૫ શ્રોણિતું, ૯ સિદ્-
પુરના શ્રીરાજવિહારમંડન શ્રી વર્ધ્માનતું
જયશ્રીમન્દિરે સિદ્ધપુરે ની શાડાતવાગું ૨૪
શ્રોણિતું, ૧૦ ધિલદુગં (ધિડર) ના અલંકાર
શ્રીઋષ્ટલહેવતું જય શ્રીમન્ નામિપ્રમબ ! થી
શાડ થતું ૨૫ શ્રોણિતું, ૧૧ તારણુગં (તારંગા)ના
અલંકાર શ્રીઅન્જિતસ્વામીતું જયશ્રીર્ગંગે
માતુર થી શાડ થતું ૨૫ શ્રોણિતું, ૧૨ નાગ-
હુંડ (નાગદા)ભૂષણ શ્રીપાશ્ર્વાંતું જય શ્રીમન્
નાગહૂદપુરથી શાડ થતું ૨૪ શ્રોણિતું, ૧૩
ઝલવદ્વિં (ઝલોધી)-મંડન શ્રી પાશ્ર્વનાથતું
જયશ્રીઃ સંશ્રેદ્ય યસ્ય થી આરંભાતું ૨૬ શ્રોણિતું,
૧૪ શ્રીમહાવીરતું મંગલ શાળાર્થ-અષ્-

[२८८]

श्री आरभानंड प्रकाश.

भीमां भंगलार्थे लघुवा योऽथ जयश्रीः विलासालयं सर्वदेवा थी शङ् थतुं २४ श्लोऽक्तुं, १५ श्री वधर्मानन्तुं डेवलाक्षरपद्मृप जयश्रियं यः सकलान्तरारि थी शङ् थतुं २६ श्लोऽक्तुं, १६ श्रीवधर्मानन्तुं जयश्री निलय यस्य ना आरंभाणुं २५ श्लोऽक्तुं, १७ जिनपतितुं महार्थं उर श्लोऽक्तुं जयश्रीदायकं ना आरंभाणुं, १८ चावीश जिनकल्याणुक्तुं जयश्रिये शाश्वतशर्म-हेतवेशी शङ् थतुं २४ श्लोऽक्तुं, १६ सीमधरस्वाभीनुं जयश्रिया मोहरिपोरवाप्त थी आरंभाणुं २५ श्लोऽक्तुं, २० स्वसांसारिकं हुःअने अकट करी हुःअ प्रतिकारनी विशसि करतुं आनन्दं यः परं प्राप थी प्रारंभ करेलुं २६ श्लोऽक्तुं, २१ श्री जौतमन्तुं जयश्रियां सेवधिमेघमान नी आहिवाणुं २५ श्लोऽक्तुं, २२ प्रझलादनपुर(पालघुपुर)भंडन प्रझलादनविहार श्रीपाश्वन्तुं जयश्रिया प्राप्तसुखप्रकर्षा थी शङ् थतुं २६ श्लोऽक्तुं अने २३ देलखला(देलेल) विभूषणु श्री ऋषभदेवतुं जयश्रिया द्वैषरिपुत्कराणां थी आरंभाणुं २६ श्लोऽक्तुं एम-इति युगप्रधानावतार-ब्रह्महत्पागच्छाधिराज--श्रीदेवसुन्दरसूरि--श्रीज्ञानसागरसूरि--श्री सोमसुन्दरसूरिशिष्यैः श्रीमुनिसुन्दरसूरि-भिर्विचिते जयश्रीङ्क श्रीजिनस्तोत्ररत्नकोशे प्रथमप्रस्तावे एम दरेक स्तोत्रने अंते जयावी पृथी ते स्तोत्रनुं नाम आपी आ पूर्ण करे छे. ग्रन्थसंख्या १०६३.

आ परथी स्पष्ट जयाय छे डे शत्रु-ज्य, गिरिनार, सोपारा, वडनगर, आयू, लुरापला, खंभात, सिद्धपुर, धडर, तारंगा,

नागदा, इलोधी, पालघुपुर, डेलवाडा-ओडियावाड, गृजरात, ऐवाडभारताऊनां ने (अपरान्त-कैंकण्ठुना) सोपारा तीर्थनी यात्रा आ स्तोत्रकारे करी हती. तेमानां डेटलांक स्तोत्रमां औतिहासिक भीनाओ. पछु मणी आवे छे: दा. त. पमा वडनगरना स्तोत्रमां डेवेल छे डे त्यांना वीरभुना मंहिरथी पवित्र थयेल संसद्भां प्रुवसेन राज्यां वीरात् ८८उमां कृष्णसूत्रनी प्रथम वाचना भडान् उत्सवपूर्वकं करी ते वधते नगरतुं नाम आनंदपुर हतुं. ६ हु आयूना स्तोत्रमां विमक्षशाह अर्णुदो. अधिपति हतो अने तेषु अंगिकाहेवीनो वर प्राप करी भावी संततिने अवगाणी ऋषभविहार झरायेः लक्ष्म अने वीजडे ते चैत्यनो उद्धार कर्यो. ६मा परथी सिद्धपुरमां राज्यविहार (डे ने सिद्धराज जयसिंहे अंधावेत) कर्त्ताना सभयमां विधमान हतो. ने तेमां महावीर भ्रुनी चतूर्थ-चामुख भूर्ति हती. १० मामांथी जयाय छे डे ईडरमां कुमार-पाल लूपादे ऋषभलैत्य अंधावेत्य हतुं अने त्यांना जोविंद नामना संधपति(डे ने) उल्लेख अगाउ थै गये. छे(ओ)उक्त मंहिरनो उद्धार कर्यो हतो. ११मामां कृषेल छे डे चौदुक्य महीपति कुमारपालतुं अंधावेलुं अजितजिन-मंहिर तारंगा पर्वत पर छे तेमां हैमथंदसूरिये प्रतिष्ठा करी हती. भ्लेच्छेअ ते जिनभिंब तोडेल हेवाथी तेनो. उद्धार नवा अंधावेत्य उक्त जोविंद संधपतिअ कर्यो ने तेनी सोमसुन्दरभ्रुनो प्रतिष्ठा करी. (चालु)

વર્તમાન સૂભાગ્યાર.

પંજાખના વર્તમાન.

આચાર્ય વર્ષી શ્રી ભદ્રિજયવક્ત્વભસ્ત્રીશ્વરજી મહારાજ નહોદર થઈ શાહકોટના શ્રી સંધની આગહભરી વિનાંતિને સ્વીકારી કેઠ વહિ આડમે શાહકોટ પધાર્યાં. શાહકોટની નૈન અને અર્જૈન જનતાએ આચાર્ય-શ્રીજીનું ભાવલીનું સુંદર સ્વાગત કર્યું.

આચાર્ય શ્રીજીના સદ્ગુપ્તેશથી શ્રીસંધે દેહરાસર માટે જ મીન ઘરીદી લીધી છે અને હાલ કામચલાડી દેહરાસર લાલા ભગવાનદાસજીના મકાનમાં સ્થાપન કરવાને નિર્ણય કર્યે છે.

અહીંથી વિહાર કરી ઢરના થઈ સુલતાનપુર પ્રધાર્યાં. અહીં સ્થાનકવાસીઓના જ ધરો છે. તેમણે આચાર્ય શ્રીજીનું સુંદર સ્વાગત કર્યું અને આચાર્ય-શ્રીજીને ચાર દિવસ રોકી વ્યાખ્યાનાદિનો લાલા લીધો હતો.

આચાર્ય શ્રી ભદ્રિજયવિદ્યાસૂરિજી મહારાજ તથા મુનિશ્રી વિચારવિજયજી મહારાજ જલંધર, હુશ્યાર-પુર (પોતાની જન-મભૂમિ) આદિને લાલ આપી પાછા અહીં આચાર્ય હેવની સેવામાં ઉપરિથિત થયા.

આચાર્ય શ્રીજી સુલતાનપુરથી વિહાર કરી ડક્કરવાડા થઈ કેઠ સુદ્ધિ અગીયારસે પદીનગરમાં સમારોહથી પ્રવેશ કર્યો. પ્રવેશમહોત્સવમાં જૈના-અનૈનો અને નગરના અગ્રગણ્ય મુનિસિપાલિટીના પ્રમુખ મીયાં હમીદઅલ્લા અને સેકેટરી બાધુ દંસરાજી આદિ હતા. સામૈયું નગરમાં દીરી મંડપમાં ઉત્તરતો હર્ષનાદી વધાવી લીધા હતા.

સ્વાગતગીતો થયાં બાહુ બાધુ મૂલભરાજજીએ અભિનંદન પત્ર વાંચી સંભળાયું અને આચાર્ય-શ્રીજીના ડક્કમળોમાં અર્પણ કર્યું. આચાર્ય શ્રીજીએ આત્મતત્ત્વ વિષય મનનીય પ્રાથમિક વ્યાખ્યાન આપી માંગલિક સંભળાયું. અગીયાર વાગે સભા વિસર્જન થઈ. દેહરાસરે શ્રી મનમોહન પાર્થનાથ ભગવાનના દર્શન કરી-ગુરુહેવ ન્યાયામભોનિધિ જૈન-

ચાર્ય શ્રી ભદ્રિજયાન-દસ્તરીશ્વર (આત્મારામ) જ મહારાજને વંદન કરી શ્રી આત્માનંદ નૈન ભવન ઉપાશ્રેય પદ્ધાર્યાં. સત્તર વર્ષી પ્રથી આચાર્ય શ્રીજી પ્રવારતા હોવાથી અને ૪૦ વર્ષો ચોમાસું થતું હોવાથી આચાર્ય નગરમાં ખૂબ ઉત્સાહ ફેલાઈ રહ્યો હતો.

આચાર્ય શ્રીજીની સેવામાં આચાર્ય શ્રી ભદ્રિજય-વિદ્યાસૂરિજી મહારાજ, પંન્યાસ સમુદ્રવિજયજી, મુનિરાજ શ્રી વિચારવિજયજી, શિવવિજયજી, વિશુદ્ધવિજયજી, વીરવિજયજી, વચનવિજયજી છે. પત્રવિષયાર કરનારે ટે: નવાયનર-શ્રી આત્માનંદ નૈન ભવન મુ. પદ્ધી-(પંજાખ) આ સરનામે કરવો.

આ સભાનો ૪૬ મો વાર્ષિક મહોત્સવ.

આ વરસે એ કેઠ આસ હોવાથી, તેમજ સં. ૧૯૪૨ ની સાલમાં ગ્રથમ નેઠ શુદ્ધ જ ના રોજ મધ્યરાત્રિના આત્મસમાનિધિ જૈનાચાર્ય શ્રીમહ વિજયાન-દસ્તરીશ્વરજી મહારાજનો સ્વર્ગવાસ થયેલ હોવાથી તેમજ તે જ સાલના [સં. ૧૯૪૨] થીન નેઠ માસમાં આ સભાનું સ્થાપન થયેલ હોવાથી થીન નેઠ શુદ્ધ જ રવિવારના રોજ આ સભાનો ૪૬ મો વાર્ષિક મહોત્સવ હોવાથી તે દિવસે સવારના નવ વાગે સભાના મકાનમાં પ્રભુ પદ્મરાવી પૂજા ભણ્યાવામાં આવી હતી. હાલમાં ચાલતા આસાધારણુ ગોંડવારીના કારણે અત્રેના ના. દરખારશ્રી તરફથી જમણવાર બંધ કરવાનો ધારો થયેલ હોવાથી વોરા હીસિંગબાઈ જવેરચંદ તરફથી કરવામાં આવતું સ્વામીવાત્સલ્ય આ વખતે બંધ રાખવામાં આવ્યું હતું.

વિહાર

પૂજય આચાર્ય શ્રી મહ વિજયલલિતસૂરિજી મહારાજ આદિ અમદાવાદથી વિહાર કરી વલાદ, પેચાપુર થઈ માણસા પદ્ધાર્યાં. અહીંના સંધે ચોમાસા માટે વિનાંતિ કરી, જેનો સ્વીકાર કર્યો. ત્યાંથી વિહાર કરી ધરાદરે આવ્યા. ધરાદરા આ. શ્રી કુસુમસૂરિજી મહારાજની જન-મભૂમિ છે. અહીંથી વિહાર કરી એછ પદ્ધાર્યાં.



૧. ચા-ધરઃ-સાત સુંદર નવલિકાનો સંગ્રહ. ધૂમકેતુ વિગેરે જાણીતા નવલક્ષ્યાના લેખકોએ સરલ ભાષામાં લખેલી આ ખુકે ગૂર્જર અંથ રતન કાર્ય-લય તરફથી તરણે અંથમાળાના છડા પુરુષ તરીકે પ્રગટ થયેલ છે. કિંમત એક ઇંધિયો. મળવાતું સ્થાન અમદાવાદ, ગાંધી રોડ, પ્રકાશકને ત્યારી.

૨. નવાં વિવેચનો-લેખક: નવલરામ જ. નિવેદી અભ. અ. વિવેચન અંથો ધણ્ય થોડા જોવામાં આવે છે તારે આ વિવેચન અંથ વાંચતાં સાહિત્યની દાખિયે પ્રકાશન યોગ્ય લાગે છે. લેખક વિદ્ધાને આ અંથમાં આપેલ પંદર જુદા જુદા વિવેચનો ખાસ વાંચવા નેવાં છે. આવા અંથોમાંથી વાંચકોને ધણ્ય જાણવાતું મળે છે. વિવેચનો ગમે તે માણસ લખી શકતો નથી, તુલનાત્મક દાખિયાણી વિદ્ધાન લેખક જ તેને ન્યાય આપી શકે છે.

૩. આનંદરાત્રિ અને ધીલ વાતો—લેખક-ધૂમકેતુ. જાણીતા નવલક્ષ્યાના વિદ્ધાન લેખકની આ લધુ પુરિઠકામાં ત્રણ વાતીઓનો સંગ્રહ છે. નણે કથાઓ સુંદર અને સરલ છે. બાધ ધૂમકેતુની સાહિત્યવાટિકા (નવલક્ષ્યાઓ) અચાર સુધીમાં જેટલી પ્રગટ થઈ છે તે સર્વ વિદ્ધતાપૂર્ણ અને રસિક છે. નવલક્ષ્યાના લેખક તરીકે ધૂમકેતુભાઈ પ્રથમ પંક્તિએ છે એમ કહેવામાં અતિશયો-કિત નથી. આ ત્રણ અંથોના પ્રકાશક ગૂર્જર અંથરતન કાર્યાલયના માલેક બાધ શંખુલાલ છે. પ્રકાશક તરફથી પ્રકટ થતાં પ્રકાશનો સુંદર, વાંચવા નેવા અને દોક લાઢુંચેરી માટે સંગ્રહ કરવા લાયક હશી શકાય. આવી સખત મેરિધવારીના વખ-

તમાં સારા સારા અંથો પ્રકટ કરવા તે એક સાહસ હશી શકાય જેથી જરૂર ઉતેજનને પાત્ર છે. મળવાતું રથળ પ્રકાશકને ત્યા, ગાંધીરોડ-અમદાવાદ.

૪. લૈન ઝંડા ગાયન સંગ્રહ-પ્રકાશક: હિંગાખરે લૈન ઝંડા ગાયન સંગ્રહ-પ્રકાશક: હિંગાખરે લૈન પુરુષકાલય, સુરત-શ્રી મૂલચંદ હિસનદાસની પડીથા. આ લધુ પુરતકમાં લૈન ઝંડાના ચિહ્ન સાથે સમયને અનુસરતાં કટલાક પહો ધર્મતું રવિપ્રથમાં આપવામાં આવેલ છે. કિંમત એક રૂપાનો. પ્રકાશકને ત્યારી મળશે.

૫. લુલનભૂમિઃ-ન્યાયવિશારદ મુનિરાજશ્રી ન્યાયવિભયણ મહારાજ. આ અંથમાં અગ્રીશ સંસ્કૃત શ્વેત જુલરાતી ધૂંગલીશ અનુવાદ સાથે સુખની પ્રામિના ઉપાયો. અતાવવામાં આન્યા છે. વિદ્ધાન મુનિરાજરચિત આવા સાભાજિક લધુ અંથો ને પ્રગટ થાય છે તે સર્વ મનન કરવા યોગ્ય હોય છે. આ અંથ લધુ છતાં ખાસ પણ-પાઠન કરવા નેવો અને સુખના ધ્રાઘણો તે પ્રમાણે વર્તે તો સુખ પ્રાપ્ત કરી શકે છે. કિંમત બેટ, પ્રચારની દાખિયે આવકારદાયક છે. પ્રકાશક:—લૈનપુરતકાલય, નવાપરા-જામભાઈયા

૬. વિવેચનની એરણું પર-લૈન ધર્મની દાખિયે ગાંધીજીની અહિંસા. શ્રીયુત ગાંધીજી સાથે ધણ્ય મહિનાઓ પહેલાં તેમની પ્રદેશી અહિંસા અને વીતરાગ ભગવાને પ્રદેશી લૈન ધર્મની અહિંસા આ બંને વચેનું અસાધારણ અંતર છે. શ્રી ગાંધીજી ઉપર લખેલા પત્રો જેનો ખુલાસે પ્રકાશકના લખવા પ્રમાણે હણું સુધી મળ્યો નથી છતાં આ લધુ પુરતકમાં તે પત્રો તેમજ સાથે સાથે લૈન ધર્મની અહિંસા વિષે સંક્ષિપ્તમાં ને સમજ આપી છે તે સર્વ વાંચવાથી લૈન ધર્મની અહિંસા શું છે? અને તેની તુલના બીજાથી થઈ શકે તેમ નથી તેમ

स्वीकार-समालोचना.

[२८१]

वाचकने जल्दी हो. प्रकाशक-अभृतवाल डेसवलाल शाह, ३० लाखुनी पेण, वटवाणु शहर. किंमत अभृत्य.

७. चामुंडराय-श्री वीर अंथमाणा पुण्य ११ मुं (नाटक). शेअड-प्रकाशक आपा भाऊ भगदूम सांगली, भराची भापामां रथेल आ नाटक छे. ते भापामां जल्दीकरने ते उपयोगी छे. किंमत छ आना.

८. शृणविचार प्रकरण-(मूळ, पद्धति अनुवाद तथा उपयुक्त टिप्पणी साथे,) अनुवादकां सुनिराजश्री दक्षविजयल महाराज. धार्मिक अभ्यासमां प्रकरणमां सौथी प्रथम ज्ञान शाण्यामां अपाय छे तेतुं आ खुक्मां सरस रीते २५४६करणु करवामां आयुं छे. पांच भागमां पांच द्वारा कमसर घटाव्या छे. निधान सुनिराजे शिक्षण भाटे उपयोगी तैयार करेल छे. प्रकाशक-श्री नैन अंथ प्रकाशक सभा-अभृतवाह, किंमत ऐ आना. आ भीज आवृत्ति तेनी उपयोगिता जल्दी हो.

९. आधुनिक भाग रजे.-संग्राहक अने संपादक धर्मिताहासप्रेमी शांतभूति सुनिराजश्री ज्यांतविजयल महाराज. आधुनिक तीर्थना धर्मिताहासना अनेक साधनो भेगा करी अति परिश्रेष्ठवडे आ आधुनिक धर्मिताहासनो भीजे भाग (एक भहतवन्तु अंग) सुनिराजश्री ज्यांतविजयल महाराज जनता समक्ष आ अंथवडे रजे करे छे. आ अंथमां नानी अने भेटी दरेक दर्शनीय वरतुम्हा, भागी विग्रेनी भाइती आपनारुं आ पुस्तक धाण्युं आवकारदायक छे; तेमज यात्रागुणो उपयोगी छे. भारतवर्ष नी शिक्षणा औतिहासिक शैषण्योग्यना अभ्यासीओ भाटे पण धाण्युं भहतवन्तु अने औतिहासिक साहित्य तरीके अखुमेलुं पुस्तक छे तेम धर्मिताहासना धर्मिताहासना उपयोगी साधन अन्युं छे. आ भाटे संपादक भहताभानी नैन डोम आभारी छे. किंमत नेत्र दीपीया. प्रकाशक श्री विजयधर्मसूरि नैन अंथमाणा, भंत्री दीप्यंद बांझीया-छोटा सराक्षा, उक्कैन.

१०. श्री दृव्यसमतिका-(भाषांतर सहिता) महाभाष्याध्याय श्री लावण्यविजयलकृत मूळ भाषांतर साथे. श्री विजयसिद्धिसूत्रश्वरल अंथमाणाना भीज पुण्य तरीके आ अंथ अकट थयो. छे. देवदृव्य तेने कहेवुं? तेना सात द्वारा, ते उटलाक प्रकारतुं, तेतुं रक्षणु, वृष्टि केम करवी? तेना होपयी केम अथवुं? निगेरे हक्काक्तो आ अंथमां जाणुवा नेवी छे. मूळ, शीका नेम शास्त्री टाईपिंगां छे तेम भाषांतर पणु आ प्रताकारे अंथ छोवाथी शास्त्री टाईपिंगां आपवामां आवेल होत तो वधारे योग्य लागत. प्रकाशक उक्त अंथमाणा तरक्षी भारतर मालुदास दीप्यंद भीलीमोरा. लेट आपवामां आवे छे.

११. अष्टक प्रकरण-(अनुवाद सहित) श्री हरिः भद्राचार्यकृत. संपादक-भुशालहास जगत्पुनहास न्यायार्थी. आ अंथवन्तुं मूळ साथे भाषांतर श्री लीभरी भाषेक तरक्षी थेऽग वर्षी पहेलां प्रकट थयेल छे, छतां विद्यार्थीयो सरल रीते तेनो अभ्यास करे तेवी रीते आ अनुवाद थयेल छे.

१२. (आचार्य श्री हेमचंद्राचार्यकृत) योगशास्त्र अनुवाद सहित-आ अंथमां यार प्रकाशीतुं भाषांतर मूळ साथे आपवामां आवेल छे. पाछण अंतर्गत कथाओनो दूँक सार, श्लोकोनो अकारार्द्धकम, विशिष्ट शब्दोनी सूचि आपवामां आवेल छे. उपरोक्त तथा आ वर्ते अंथे. श्री भहतावार विद्याक्षयना अभ्यासक्रमां दाखल करवामां आवेल छे. आ अंथ पणु मूळ सहित अनुवाद लीभरी भाषेक थेऽग वर्ष पहेलां प्रकट करेल छे छतां विद्यार्थी सरल रीते अक्षयना करी शके तेवी दृष्टि अनुवाद करवामां आवेल छे. किंमत यार आना ने आह आना प्रयारहृष्टिये योग्य छे.

१३. श्री अंलात शान्तिनाथ ग्राचीन ताडपत्रीय लैन ज्ञानकांडारलुं सूचिपत्र-तैयार करनार श्री विजयकुमुदसूरिल महाराज. प्रका-

[२८]

श्री आत्मानंद प्रकाश.

राडो-मोहनलाल हीपयंड चोड़सी तथा बालाभाई लल्लुभाई शाह, भंगीओ. भंभात जेम प्राचीन राहेर छे तेम ते तीर्थ तरीके अने शानभांडर भाटे पछु प्राचीन ज छे अम तेना धरिहास कहे छे. आ सूचिपत्रमां जल्लुवेल डेलीक प्रतो तो अलब्य छे. आ सूचिपत्रमां १४७ ताउपत्रीय, पट डागण उपर लभायेली प्रतो, २८ अर्खु अतोमांथी प्रतो वजेरेतुं लीस्ट खपी मधुष्येने उपयोगी थर्छि पउ ते राते करवामां आवेल छे. प्रथम आ शानभांडरना उद्धार विदान आचार्य श्री विजयवत्तमसुरी-वरशु तथा तेमना सुप्रशाण्य सुनिराजश्री चरण-विजयल भहाराजना वरह हस्ते थयो. होतो, जेथी आ शानभांडर आयुष्य वधना साथे आवुं सूचिपत्र तयार करनार पछु सुनिमहाराजश्रीना डाथे थयेल होइ तेनी भहरतामां वधारो थयो छे. ज ने शहरमां शानभांडर हाय त्याना श्री संघे अनुकरेषु उरवा योग्य छे.

१४. हुं ने भारी धा. लेखक सुशील, प्रका-
शक-विनयचंद युलाभ्यचंद शाह झी. ए. भह-
द्य अंथमाणा पुण्य १ लु. भराही भाषाना पुस्तक-
मांथी लेखक युजरातीमां लेखक आ पुरतङ्क छे. आ
पुस्तक जेम सहज, सुखम अने स्वाभाविक उप-
योगी छे तेम तेमां भातुरनेही झांझी पछु छे.
नवलकथा तरीके पछु तेमां सुदूर संकेना छे.
प्रकाशक पोताना निवेदनमां सरकारना जे उपयो-
गोता भतानी छे ते पछु आ पुस्तकना वाचनया
जाण्ही शकाय तेवुं छे. प्रकाशक पोते पछु शिक्षण
पामेल होवायी तेमधु लेखेलुं निवेदन पछु वाचवा

जेवुं जाण्हुसुं छे. आ ग्रंथ सर्वने वाचवा भला-
भणु करीओ छोओ. उक्त अंथमाणाना हो व पछीना
पुण्यो आवा सरण अने ऐधायक प्रगट करवानी
प्रकाशकने सूचना करीओ छोओ. दिनत बार आगा
योग्य छे. भगवान्तुं स्थगः श्री भहोदय प्रिन्टीग प्रेस
दाण्डापीठ-भावनगर.

१५. धर्मवीर उपाध्यायल श्री सोहन-
विजयल महाराज-प्रेसेज्क, इलयंड लिंगंडहोरा
महुवाकर. प्रकाशक-भंगीओ, श्री आत्मानंद जैन
सभा मुंग्ध. योआ वजत पहेलां हिन्दी भाषामां
'आदर्श उपाध्याय' ऐ नामथा उपाध्यायश्री सोहन-
विजयल महाराजन्तुं शुभनयरित प्रकट थयेल हुं
पछु युजराती भाषाना जाणुकार भाटे आ अति उप-
योगी अने अहसुत चरित्र प्रकाशित थया जरूर
हती. चरित्रनायक जेम धर्मवीर अने आदर्श उपा-
ध्याय होता तेम युरुक्ता, धर्मधुरंधर अने चारित्र-
पीत्र होता. तेमना शुभनप्रसंगे रोमांचक अने अहसुत
छे. उपाध्याय भहाराजे जैन धर्मनी उन्नति अने
गौरव, भाटे अने धर्मना सिद्धतीना प्रयार भाटे
शरीरनी पछु दरकार करी नथी. अहिंसाना
प्रयार भाटे तेमने देवी धून होती. तेमन धन्जय
युक्तुण अने ज्ञाति संगठन आ ऐ कार्य हिंसत-
पूर्वक करी वताव्या छे. तेमोनी वाणीमां
ऐटली भयुरता, विद्वा अने सुंदरता होती के पंज-
भामां तेना व्याघ्यानमां हिंडु-सुसलमान सर्व डोह
तेमना भक्त अनीजता होता. आ चरित्रमाना तेमो-
श्रीना शुभनना एक एक प्रसंगे भनन करवा
जेवां छे. प्रकाशक संस्थानो आ प्रथम प्रथमन प्रशंस-
नीय छे अम कहेवुं जोह्यो.

श्री

आत्मानंद प्रकाश.

[पुस्तक ३८ मु'.]

[सं. १९६७ ना आवण्याथी सं. १९६८ ना अशाढ मुधीनी]

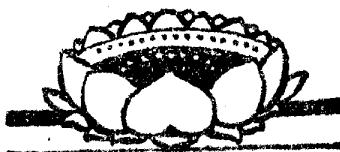
वार्षिक विषयातुकमणिका.

नंबर	विषय	लेखक	पृष्ठ
१.	अलु रुति (खोड)		१
२.	नृतन वर्षालिनंदन (काव्य)	(कवि रेवाशंकर वाळजु अधिका)	२
३.	नृतन वर्षानु भंगलभय विधान	(संपादक भंडण)	३
४.	पर्युषण भाषणपर्वते। हिंद्य संदेश	(मुनिश्री न्यायविजयज्ञ महाराज)	४ A
५.	पर्वतिराज पर्युषण पर्व (अपदागद्य) (मुनिश्री हेमेन्द्रसागरज्ञ महाराज)	६, २६	
६.	विचारशेषी	(आ. श्री विजयकरतूरसुरिज्ञ महाराज)	११
७.	पर्युषण्याः आत्मसिद्धिनु भाषापर्व	(डॉ. भगवानदास अनःसुभाष्टि भड्डा) १३, ३४, ६३	
८.	ग्रेमथी मुक्ति	(मोहनलाल दीपचंद चोकसी)	१५, ७२
९.	उपहेशक पुष्पो।	(सं. पंथास श्री समुद्रविजयज्ञ महाराज) १७, ३१, ४०, ८६ ११६, १३५, १४४	
१०.	श्री मुनिसुदर्स्मरि	(मोहनलाल द. देशाई, व्ही. ए. एकमेल, व्ही. एडवेक्ट) २०, ३७, ६६, १४४, १६२, १८८, २१३, २५५, २८७	
११.	चौवीश तीर्थैंडरतु स्तवन	(मुनिश्री लक्ष्मीसागरज्ञ महाराज)	२२
१२.	वर्तमान समाचार (पंजाय समाचार वि.)	२४, ४८, ७४, ८७, १२३, १४६, १६६, १६६, २१७, २४३, २६७, २८६	
१३.	स्वीकार-सभावेचना	२५, ५१, ७६, ८६, १४८, १७२, १८५, २६०	
१४.	‘श्री आत्मानंद प्रकाश’ भाषेना आशीर्वादो (ज्ञुदा ज्ञुदा मुनिमहाराजांग्रे)	२६	
१५.	अभिनंदन (काव्य)	(मुनिश्री हेमेन्द्रसागरज्ञ महाराज)	२६
१६.	भयूरान्येमक्ति	(कवि रेवाशंकर वाळजु अधिका)	२७
१७.	क्षमापना पद	(रायचंद भूलजु पारेख)	३५
१८.	श्री भूमापुन अरित्र	(मुनिश्री पुण्यविजय : संविहापाक्षिक)	४०, ६१, १११
१९.	पद्मविभानन सम्परंभ		४३

नंबर	विषय	लेखक	
२०.	सागरान्येकिता	(कवि रेवाशंकर वालजु अधिका)	पृ४
२१.	दीपोत्सवी स्तवन	(मुनिश्री हेमेन्द्रसागरज महाराज)	५३
२२.	द्विवालीपर्व (काव्य)	(" ")	५५
२३.	उत्तमीमांसा:	(आ. श्री विजयकरतूरसुरिण महाराज)	५५
२४.	अक्षु महावीरे मोहमस्त जगतने त्यागधर्म ज इम आयो ? (मुनिश्री हंससागरज महाराज)	६५	
२५.	सुधारा:		७५, १४५
२६.	नृतन वर्षाभिलाषः (काव्य)	(भास्तर विजयचंद्र मोहनलाल थाळ)	७७
२७.	नृतन वर्षाभिनंहन (काव्य)	(कवि रेवाशंकर वालजु अधिका)	७८
२८.	कलिकालसर्वस (काव्य)	(मुनिश्री हेमेन्द्रसागरज महाराज)	८०
२९.	भृत्युसमीक्षा:	(आ. श्री विजयकरतूरसुरिण महाराज)	८१
३०.	दीपोत्सवी. (काव्य)	(मुनिश्री हेमेन्द्रसागरज महाराज)	८१
३१.	अरुं सङ्कु काम आकृ छे. (काव्य) (आ. श्री विजयकरतूरसुरिण महाराज)	८५	
३२.	स्तवननिक्तो सार.	(श्री मोहनलाल दी. चोकसी)	८८
३३.	सुभाषित वयनामृतो:	(मुनिश्री लक्ष्मीसागरज महाराज)	८०, २१०
३४.	कलिकालसर्वस श्री हेमयंश्राचार्य (काव्य) (. ,)		८४
३५.	अभरआया	(इन्द्रियलाल ज. रावण धी. ए.)	८५
३६.	आत्म-समर्पण (काव्य)	(मुनिश्री हेमेन्द्रसागरज महाराज)	१०१
३७.	श्री विजयवलभसर्वष्टुकम् (काव्य) (प. रामानुजाचार्यविरचित)	१०२	
३८.	उपहेषक ५६	(सुयश)	१०३
३९.	नालिकरान्येकिता	(कवि रेवाशंकर वालजु अधिका)	१०४
४०.	पापना पंथे	(आ. श्री विजयकरतूरसुरिण महाराज)	१०५
४१.	विद्यार्थीओने हितसदेश.	(स. मुनिश्री लक्ष्मीसागरज महाराज)	११४
४२.	यक्तवर्ती यतुर्दशार वर्णन.	(संग्राहक V.)	११८
४३.	वीरपथुं ते आत्मदाषे	(श्री मोहनलाल दी. चोकसी)	१२०
४४.	उपहेषापद	(आ. श्री विजयकरतूरसुरिण महाराज)	१२२
४५.	भ्रेक्षर तीर्थमंडन श्री महावीर स्तवन. (मुनिश्री हेमेन्द्रसागरज महाराज)	१२५	
४६.	धर्महीनी दाल (काव्य)	(कवि रेवाशंकर वालजु अधिका)	१२६
४७.	श्री सिद्धरतोत्त.	(डॉ. भगवानदास भनःसुखभाई भडेता) १२७, १५६, १७६, २००	
४८.	नेतिक उपहेषक ५६	(सुयश)	१३०
४९.	श्री क्षुतग्नान.	(प. श्री धर्मविजयज महाराज) १३१, १५८, २०२, २२६	
५०.	निश्चय अने व्यवहारथी भार ग्रतुं स्वृप. (मुनिश्री पुण्यविजयज : संविद्यपाद्धिक)	१३७	
५१.	विनयः सायुं आख्यपथ		१३८
५२.	भानवने हितोपदेश	(स. मुनिश्री लक्ष्मीसागरज महाराज)	१४०
५३.	चैतिलासिक दृष्टि	(श्री मोहनलाल दी. चोकसी)	१४१
५४.	तडागान्येकिता	(कवि रेवाशंकर वालजु अधिका)	१४६

नंबर.	विषय.	लेखक.	पृष्ठ.
५५.	सर्वव्यापी आत्महेतुने	(मुनिश्री हेमेन्द्रसागरज्ञ महाराज)	१४३
५६.	सावधान सहा सुभी	(आ. श्री विजयकर्तूरसूरिज्ञ महाराज)	१४२
५७.	अक्षु रुति (काव्य)	(सुयश)	१४५
५८.	“ (“)	(“)	१४९
५९.	चारित्राचारना संक्षेपमां आठ प्रकार	(मुनिश्री पुष्यविजयः संविज्ञपाक्षिक)	१५६
६०.	अक्षुनुं जान (काव्य)	(सुयश)	१७३
६१.	अक्षु महावीर पंचकल्याणुक भडिमा (रास)	(मुनिश्री हेमेन्द्रसागरज्ञ महाराज)	१७४
६२.	वीर का ध्यान	(सुयश)	१७५
६३.	धर्मस्वरूप	(आ. श्री विजयकर्तूरसूरिज्ञ महाराज)	१७८
६४.	मुनिनुं स्वरूप		१८१
६५.	कृतिभता (डोण-इंग)	विषे श्वानोक्ति. (कवि रेवाशंकर वालज्ञ अदेका)	१८२
६६.	जान अने किया.		१८३
६७.	अजित सूक्तमाणा	(स. मुनिश्री लक्ष्मीसागरज्ञ महाराज)	१८४
६८.	अहिंसानी अहसुन राक्षित	(भोगनकाल ही. योक्सी)	१८६
६९.	शास्त्रज्ञान	(श्रीमान कुंदुंद्वार्यार्थ)	१८८
७०.	विश्वसंरक्षितमां जैन धर्मनुं स्थान	(उध्घृत)	१८९
७१.	श्री महावीर प्रार्थना (काव्य)	(मुनिश्री हेमेन्द्रसागरज्ञ महाराज)	१९७
७२.	समयधर्म (काव्य)	(कवि रेवाशंकर वालज्ञ अदेका)	१९८
७३.	नवपद स्तवन.	(मुनिश्री हेमेन्द्रसागरज्ञ महाराज)	१९९
७४.	तात्त्विक विचारणा	(आ. श्री विजयकर्तूरसूरिज्ञ महाराज)	२०५
७५.	महावीर जिन स्तवन	(सुयश)	२०८
७६.	तात्त्विक उपदेश वचनो (स. ने यो. मुनिश्री पुष्यविजयः संविज्ञपाक्षिक)	२०६, २२७, २५३, २७४	
७७.	दिवाली हिन श्री वीरजिन स्तवन	(सुयश)	२११
७८.	‘ हे चेतन ! आत्मसुखने पाम ’	(स. मुनिश्री लक्ष्मीसागरज्ञ महाराज)	२१२
७९.	साचो अमण्	(श्रीमान कुंदुंद्वार्यार्थ)	२१६
८०.	युरुदेव-स्मरण् (काव्य)	(मुनिश्री हेमेन्द्रसागरज्ञ महाराज)	२२१
८१.	सिहान्योक्ति	(कवि. रेवाशंकर वालज्ञ अदेका)	२२१
८२.	धर्म-रक्षक-विजयानं दस्त्रीश्वरज्ञ (काव्य) (मुनिश्री हेमेन्द्रसागरज्ञ महाराज)	२२३	
८३.	सुख-हुः विचारणा	(आ. श्री विजयकर्तूरसूरिज्ञ महाराज)	२२४
८४.	कृपायज्य		२२६
८५.	अपरिग्रह	(श्रीमान कुंदुंद्वार्यार्थ)	२३४
८६.	देवीनो स-हेश	(भोगनकाल ही. योक्सी)	२३५
८७.	परनिदा (काव्य)	(अमरव्यं भावज्ञ शाह)	२३८
८८.	छात्रालयो	(लेखक: जैन)	२३६
८९.	भनःशुद्धि	(योगशास्त्र)	२४१

નંબર.	વિષય.	લેખક.	પૃષ્ઠ.
૧૦.	ચોગાતુસવ સુખસાગર	(સં. મુનિશ્રી લક્ષ્મીસાગરજી મહારાજ)	૨૪૨
૧૧.	આદિ નિનંદ સ્તવન	(સુયશ)	૨૪૫
૧૨.	આન્ધ્રવિક્ષાન્યોક્તિ	(કવિ રેવાશંકર વાલજી અધેકા)	૨૪૬
૧૩.	વિકાસના પંથે	(આ. શ્રી વિજયકસ્તૂરસુરિજી મહારાજ)	૨૪૮
૧૪.	નવતરણ (કાવ્ય)	(અમરચંદ ભાવજી શાહ)	૨૫૨
૧૫.	સમભાવ	(ચોગશાલે)	૨૫૫
૧૬.	શ્રી હરિલદસ્સરિ	(છિધૃત)	૨૫૬
૧૭.	તતમનધનની સંક્ષિપ્તતા અને નિષ્ઠિતા	(અમરચંદ ભાવજી શાહ)	૨૫૮
૧૮.	શ્રી વિજયાનંદસુરિને	(મુનિશ્રી લક્ષ્મીસાગરજી મહારાજ)	૨૬૧
૧૯.	એક એકાન્તવાસી મહાત્માનો ઉપહેરા (અનુઃ અચ્યાસી થી. ઓ.)		૨૬૨
૨૦.	પાશ્વનાથ સ્તવન	(સુયશ)	૨૬૬
૨૦૧.	હંસાન્યોક્તિ	(કવિ રેવાશંકર વાલજી અધેકા)	૨૭૦
૨૦૨.	આતમણિંદ્ર (કાવ્ય)	(અમરચંદ ભાવજી શાહ)	૨૭૧
૨૦૩.	અર્થદાસિ (,,)	(બાધુભાઈ મ. શાહ)	૨૭૨
૨૦૪.	પ્રશભની મૂર્તિસમા અનાથ સુનિ (અપદ્ધાગદ) (સુનિ શ્રી હેમેન્ડ્રસાગરજી મહારાજ)		૨૭૩
૨૦૫.	સતપુરુષ (કાવ્ય)	(અમરચંદ ભાવજી શાહ)	૨૭૫
૨૦૬.	ભાવનાયળ શું ન કરી શકે ?	(આ. શ્રી વિજયકસ્તૂરસુરિજી મહારાજ)	૨૭૬
૨૦૭.	વીર પ્રભુની રતુતિ, (કાવ્ય)	(સુનિ શ્રી લક્ષ્મીસાગરજી મહારાજ)	૨૮૨
૨૦૮.	પેદો હિંબાર સાંધુ	(મોહનલાલ દી. ચોક્સી)	૨૮૩



(अनुसंधान टाईटल पृष्ठ २ थी चालु.)

लवाज्जम वधारवुं सभाने व्याजभी लाग्युं नथी, तेम सभासहा-आहडोनुं ते भाटे इंड करवुं योग्य लाग्युं नथी; तेम दूर वरसे अपाती सुंदर बेटनी शुक्रां पणु उपरोक्त कारणे आ वर्खते करकसर करी भासिकनी भद्रत्वतामां घटाडा पणु करवानो नथी नेथी आ वर्खते “न्यायांलोनिधि श्री विजयानंदसूरि” नामनुं सुंदर पुरतक अभारा भानवंता आहडोने बेट आपवुं सभाने योग्य लाग्युं छे.

२४. श्रीमह विजयानंदसूरीश्वर (आत्मारामज्ज भहाराज) एमना सभयना एक युगप्रधान पुरुष हना. नैन संघने वीटी वजेलो होडोसे असो वर्षंनो अंधकार एमणे एकदे हाथे उलेच्यो हतो. शास्त्रभंडारामां ठंकाठ रहेलां रत्नो एमणे शुक्रां करी यताव्यां. तेओ जेटला किंचापरायथु हता तेटला ज अध्ययनशील हता, जेटला कांतिकारी हता. तेटला ज ऋग्णु अने नम्र हता, जेवा उपाश्रयना उपहेशक हता. तेवा ज समर्थ प्रचारक पणु हता. संयम अने सिंहगर्जनानो सुंदर सभन्नय एमनी आकृतिभां, एमना साहित्यभां अने श्रवनव्यवहारभां पणु जेऽश शकाय छे. आवा एक महान पुरुषना यारिन्णवनभां अनेका अनेक सुंदर प्रसंगेत्तुं विरतारपूर्वक वर्णन आ बेटनी शुक्रां आपवामां आव्युं छे. श्रवनयरित्र ए भतुष्यल्लवनने उन्नत अनाववामां अने भोक्ष सुधी लाई जवामां एक भार्गदर्शक वस्तु छे. आवुं सुंदर पुरतक अभारा भानवंता आहडोने बेट आपवाथी आ वर्खते पणु संतोष अने आनंद थरो. नेथी-

**अभारा भानवंता आहडोने नीचे प्रभाषे लवाज्जम
भनीच्याईरथी भोक्ली आपवुं.**

३। ३-८-० ‘आत्मानंद प्रकाश’ना वर्ष ३८ तथा ४०ना ऐ वर्षना लवाज्जमना तथा ०-३-० उपरनी बेट शुक्रुं योस्टेज.

उपर मुज्ज्य आपना तरङ्गथी ३। ३-११-० भनीच्याईरथी भएया आह बेटनी शुक्र प्यासद्वारा भोक्लवामां आवशे. भनीच्याईरथी लवाज्जम नहिं भोक्लनार आहडोने तेना वी. पी. योस्टना ३। ०-३-० भणी टुक ३। ३-१४-०त्तुं वी. पी. करवामां आवशे, जे स्वीकारी आभारा करवो. प्रथम लवाज्जम भोक्लनारने योस्टनो पणु लाभ थरो.

अशाऊ शुद्ध १५ थी बेटनी शुक्र अगाउथी लवाज्जम नहिं आवेल हो तेओशीने वी. पी. थी भोक्लवामां आवशे, ते अभारा भानवंता आहडो. २वीकारी वेश. डोधपणु कारणे वी. पी. २वीकारी वगर पाषुं भोक्ली, आवा भोंधवारीना वर्खतभां नाहक ज्ञानभाताने तुक्तशान नहिं करवा नम्र सूचना करीचे छीओ.

अभृतसदनिवासी लाला युनीलालज्जने. स्वर्गवास.

अभृतसद(पंजाण्णनिवासी) धर्मभूति लाला युनीलालज्ज नैन थेडा दिवसनी यिमारी बोगवी स्वर्गवास पाम्या छे. तेओ हेवयुर्धमना उपासक हता अने पुनामां पूज्यपाह आचार्यवर्ष श्रीमह विजयवधुभस्त्रीश्वरज्ज पासे आर वत अंगीकार कीयों हतां. दररोज ऐ वर्खत प्रतिक्षेप, पूजा, तपश्चर्या पणु सारा प्रभाषुमां करतां. पर्युषिणु पर्व अने नवपद योगीमां व्याख्यान पणु वांचता अने किंच करावता. तेओशीना स्वर्गवासथी पंजाण्णमां एक धर्मात्मा श्रावकनी योट पडी छे. तेओशीना सुपुत्र लाला शांतिलाल आदिने तेमना पगले यालवा भलामणु करवा साथे सहगतना आत्मानी शांति धर्याई छीओ.

Reg. No. B. 431

श्री प्रभावक दसूरिविरचित-

श्री प्रभावक चरित्र (भाषांतर)

ऐतिहासिक कथा-साहित्यनो आ थंथ वर्तमानकालना आवीश प्रभावक आयार्य महाराजना लुवन उपर कठी महापुरुषे सारो प्रकाश पाऊँ छे. जे ने महान आयार्यनो परिचय आप्यो। छे तेमां ते समयनी सामाजिक, धार्मिक, राजकीय परिस्थिति ऐतिहासिक दृष्टिए आपी सुंदर कथानक (भाषांतर) प्रभाषिक ऐतिहासिक थंथ बनावयो। छे. मुनिराज श्री कल्याणुविजयल महाराजे ऐतिहासिक दृष्टिए सुंदर पर्यावेक्षणा लभी ते थंथनी रथनामां सुंदरता वधारी प्रभाषित जैन कथासाहित्यमां उभेरा क्यो छे. अवा सरल, सुंदर अने सरलतापूर्वक रथना करेल छाइने आ थंथ अमुक अमुक जैन शिक्षणुशालाओ। माटे धार्मिक अव्यासकममां स्थान मेगवेल छे. आवो उपयोगी साहित्य-थंथ होवाथी वांचतां पर्ण आस आनंद उत्पन्न करे तेवो। छे. किंभत ३। २-८-० पोस्टेज अलग.

लेखा:- श्री जैन आत्मानंद सक्षा-आवनगर.

श्री तीर्थंकर भगवानना सुंदर चरित्रा

१. श्री चंद्रगम्भु चरित्र.	३। १-१२-०
२. श्री सुपार्श्वनाथ चरित्र भाग १ ले.	३। २-०-०
३. सदर भाग २ ले.	३। २-८-०
४. श्री विभवनाथ चरित्र.	३। १-१२-०
५. श्री भद्रानीर चरित्र.	३। ३-०-०
६. श्री वासुपूर्ण चरित्र.	३। २-८-०
	३। १३-८-०

उपरना विस्तारपूर्वक चरित्रा एक साथे बहाँ केनारने अभारा तरहथी प्रकट थेल अनेक सुंदर चित्रा सहित साहा कपडानां पाडा बाघनींगवाओ। श्रीपाल रास अर्थ सहित (३। २-०-० ती किंभतनो) बोट आपवामां आवशे.

कर्मथंथ भाग १-२ संपूर्णः

१. सदीक यार कर्मथंथ श्रीभद्रवेन्द्रसूरिविरचित-प्रथम भाग ३। २-०-०
२. शतकनामा पांचमो अने सप्ततिकालिधान छहो कर्मथंथ, द्वितीय भाग ३। ४-०-०
धणी ज कण्ठपूर्वक तेवुं संशोधन, अभारी प्रस्तुत आर्थितामां सावधानपूर्णे संपादक महापुरुषोंमो आ अंने थंथामां क्युँ छे अने रथना, संकलना विद्वत्तापूर्णे करवामां आवेल छे; जे थंथ जेया पठी ज जथाय तेवुं छे. आडी तेनी साथे युज्वलती भाषामां आपेल प्रस्तावनामां विगतो, थंथकारनो परिचय, विषयसूचि, कर्मथंथनो विषय क्या थंथामां छे तेनी सूचि, पारिभाषिक शब्दना स्थानदर्शक डोश, श्वेतांबरीय कर्मतत्त्वविषय शास्त्रोनी सूचि, कर्मविषयना भणतां तथा, छ कर्मथंथान्तर्गत विषय दिग्बंधरी शास्त्रोमां क्या क्या स्थले छे तेना निर्देश वगेरे आपवामां आवेल होवाथी अव्यासीओ माटे आस उपयोगी थेल छे, जे प्रथम अलार पडेल कर्मथंथ करतां अधिकतर छे.

जिया ऐनीक कालगो। उपर, सुंदर टाइपो। अने अल्पभूत तथा सुंदर बाघनींगमां अंने भागो। प्रकट थेल छे. किंभत अंनेना ३। ६-०-०. पोस्टेज जुँ.

लेखा:- श्री जैन आत्मानंद सक्षा-आवनगर.

